वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हिन्दू विश्व

जून 01-15, 2025

सिन्दूर की ताकत के आगे गिड़गिड़ाया पाकिस्तान

विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित 8वां ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन
ऑस्ट्रेलिया इंक और इसके पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया चैप्टर द्वारा डक्सटन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया

हैदराबाद (तेलंगाणा) में विहिप प्रचार प्रसार विभाग की अ. भा. बैठक के अवसर पर उपस्थित विहिप महामंत्री श्री बजरंग लाल जी बागड़ा, संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी जैन, प्रचार प्रसार विभाग के अ.भा. प्रमुख श्री विजयशंकर तिवारी तथा देशभर से पधारे कार्यकर्ता

मंदसौर (म.प्र.) में मालवा प्रांत के दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग में उपस्थित शिक्षार्थी

सिलचर (असम) में गुवाहाटी क्षेत्र के धर्मप्रसार विभाग के धर्मरक्षकों के दो दिवसीय वर्ग में उपस्थित धर्मप्रसार के केन्द्रीय व गुवाहाटी क्षेत्र के क्षेत्रीय व प्रांतीय पदाधिकारी

हिन्दू हेरीटेज सेन्टर, रोटोरुआ में पहला आठ दिवसीय कल्याण सप्ताह का आयोजन हुआ

हे अग्निदेव! अपने पराक्रम से आप शत्रुओं का संहार करें। गौओं की इच्छा करने वाले आप हमारे लिए प्रचुर धन प्रदान करें। महानता के पोषक आप से हम महानता की कामना करते हैं। युद्ध में आप हम से विपरीत न हों, जिस प्रकार भारवाहक भार को उठा लाता है, उसी प्रकार शत्रु से जीती हुई, संग्रहित सम्पदा को लाकर हमें प्रदान करें।
– सामवेद

हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

01–15 जून, 2025
ज्येष्ठ शुक्ल – आषाढ़ कृष्ण पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. – 2082, युगाब्द– 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. – 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा, धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार, रवि पराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. – 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग – 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली–110022–05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishwa@gmail.com

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए वार्षिक डाक व्यय सहित	$ 75 USD
एक प्रति	15/–
वार्षिक	300/–
त्रिवर्षीय	750/–
पंचवर्षीय	1,200/–
दसवर्षीय	2,250/–
पन्द्रह वर्षीय	3,100/–

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज – 28

जो कहा वो किया ऑपरेशन सिंदूर 08
पाकिस्तान में पनप रहे गृह युद्ध के हालात? 10
चीनी हथियारों ने डुबा डाली पाकिस्तान की लुटिया... 11
भगवान गौतम बुद्ध : सिद्धांत, सनातन धर्म और इस्लामी आक्रमण 13
शानदार जीत से भारत एशिया की एक बड़ी शक्ति बना 15
भारत–पाक युद्ध के बाद ट्रंप की रणनीति में बदलाव : दोस्ती या तकरार? 17
लव जिहादियों के निशाने पर मध्यप्रदेश की बेटियाँ! 19
मजहबी शिक्षा : जन्नत नहीं जहन्नुम की ओर ले जा रही है 20
गर्मियों का एनर्जी ड्रिंक है सत्तू 21
पर्थ में हिंदू नेता एकजुट हुए, व्यापक एकता और प्रभाव का आह्वान किया 22
सामूहिक चर्चा करके कार्य करने से संगठन यशस्वी होता है : बजरंग लाल बागड़ा 24
विहिप के गोरक्षा विभाग के तत्वावधान में 'गौभक्त नागरिक संगोष्ठी का आयोजन' 25
अंडमान निकोबार द्वीप समूह में बजरंग दल – शौर्य प्रशिक्षण वर्ग 26

सुभाषित

जीर्यन्ते जीर्यतः केशा दन्ता जीर्यन्तिःजीर्यतः।
क्षीयते जीर्यते सर्व तृष्णैवैका न जीर्यते।।

वृद्धावस्था को प्राप्त होने पर मनुष्य के केश पक जाते हैं, दाँत टूट जाते हैं और शरीर जीर्ण हो कर क्षीण हो जाता है, किन्तु मनुष्य की एक मात्र तृष्णा ही ऐसी है, जो जीर्ण नहीं होती, नित्य ही बनी रहती है।

भारत के विरुद्ध वैश्विक और आंतरिक षड्यंत्र: एक आत्मचिंतन

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

भारत आज केवल एक भौगोलिक सीमा में बंधा राष्ट्र नहीं है, बल्कि एक जीवंत सभ्यता, एक सांस्कृतिक शक्ति और विश्व के लिए एक नैतिक पथ–प्रदर्शक है। यही कारण है कि भारत के उत्थान से कुछ वैश्विक शक्तियाँ असहज हैं–चाहे वे इस्लामी कट्टरपंथ को पोषित करने वाले राष्ट्र हों, या, कुछ ऐसे ईसाई प्रभुत्ववादी देश, जो सांस्कृतिक और धार्मिक रूपांतरण के माध्यम से भारत की आत्मा को बदलना चाहते हैं। दुर्भाग्यवश, इस वैदेशिक षड्यंत्र को भारत के भीतर बैठे कुछ राजनीतिक दल और विचारधाराएँ न केवल समर्थन दे रही हैं, बल्कि उसे वैधता भी प्रदान कर रही हैं।

हाल ही में जब भारत ने पाकिस्तान की सीमापार आतंकी अड्डों को ध्वस्त किया, तब पूरी दुनियाँ ने भारत की सैन्य क्षमता का लोहा माना। जब भारत ने अमेरिका द्वारा आपूर्ति किए गए फाइटर जेट्स और चीन द्वारा विकसित सुरक्षा प्रणाली को युद्धाभ्यास में निष्क्रिय कर दिखाया, तो विश्व मंच पर भारतीय वायुसेना की रणनीतिक कुशलता का डंका बजा। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि भारत के अंदर ही कुछ राजनीतिक दल, जिनका राजनीतिक आधार छीन रहा है, वे इन गौरवमयी कार्यवाहियों को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं।

क्या भारत की वायुसेना पर संदेह करना देशभक्ति है? क्या सीमापार आतंकवादियों के खिलाफ निर्णायक कार्यवाही को 'राजनीतिक स्टंट' बताना राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ खिलवाड़ नहीं है? जब पूरा विश्व भारत की सामरिक श्रेष्ठता की सराहना कर रहा है, तब भारत के ही कुछ नेता, कुछ पत्रकार और तथाकथित बुद्धिजीवी सेना को कठघरे में खड़ा कर रहे हैं। यह केवल आत्मघाती मानसिकता नहीं, बल्कि एक सुनियोजित षड्यंत्र है।

क्या भारत की वायुसेना पर संदेह करना देशभक्ति है ? क्या सीमापार आतंकवादियों के खिलाफ निर्णायक कार्यवाही को 'राजनीतिक स्टंट' बताना राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ खिलवाड़ नहीं है? जब पूरा विश्व भारत की सामरिक श्रेष्ठता की सराहना कर रहा है, तब भारत के ही कुछ नेता, कुछ पत्रकार और तथाकथित बुद्धिजीवी सेना को कठघरे में खड़ा कर रहे हैं।

वास्तव में यह लड़ाई केवल सीमाओं की नहीं है, यह लड़ाई भारत की आत्मा की है। कुछ वैश्विक ताकतें भारत को एक इस्लामिक राष्ट्र में परिवर्तित करने के सपने देख रही हैं, तो कुछ मिशनरी समर्थित संस्थाएँ इस देश के सामाजिक ताने–बाने को ईसाईकरण के माध्यम से बदलना चाहती हैं। वे जानते हैं कि भारत की सनातन संस्कृति जब तक जीवित है, तब तक वह किसी भी प्रकार के वैचारिक उपनिवेशवाद को स्वीकार नहीं करेगा।

इन विदेशी षड्यंत्रों को सफल बनाने के लिए उन्हें देश के भीतर बैठे सहयोगियों की आवश्यकता होती है–ऐसे सहयोगी जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर सेना को दोषी ठहराते हैं, जो आतंकियों के मानवाधिकार की बात करते हैं, जो 'भारत तेरे टुकड़े होंगे' जैसे नारे लगाने वालों के साथ खड़े होते हैं।

यह समय है, जब देश की जनता को जागरूक होना होगा। हमें यह समझना होगा कि केवल बाहरी शत्रु ही भारत के लिए खतरा नहीं हैं, वे भी उतने ही घातक हैं, जो भारत की सेना, भारत की संस्कृति और भारत की अस्मिता को भीतर से खोखला करना चाहते हैं। इन 'अंदरूनी शत्रुओं' की पहचान कर, उन्हें लोकतांत्रिक माध्यमों से जवाब देना, अब हर राष्ट्रप्रेमी नागरिक का कर्तव्य है।

हिंदू समाज को विशेष रूप से सतर्क रहना होगा। यह उसका ही धर्म, उसकी ही संस्कृति और उसका ही राष्ट्र है, जिसे लक्ष्य बनाकर यह अभियान चलाया जा रहा है। समय आ गया है कि हम केवल भावनात्मक प्रतिक्रिया न दें, बल्कि वैचारिक और बौद्धिक मोर्चे पर भी सशक्त हों।

हमारे साधु–संतों, हमारे संगठनों, हमारे युवाओं और हमारे प्रबुद्धजनों को मिलकर यह निर्णायक संदेश देना होगा–भारत न कभी झुका है, न झुकेगा और न ही वह कभी अपनी सनातन आत्मा को खोएगा।

सिन्दूर की ताकत ने केवल पाकिस्तान ही नहीं चीन, टर्की, अमेरिका तक को हिला दिया

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

विनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीत। केवल तीन दिन की प्रतिक्षा में श्रीराम ने समन्दर को औकात बता दी थी, तो केवल तीन दिन के महाविनाशक आक्रमण से भारत ने पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया। ऑपरेशन सिन्दूर से पाकिस्तान तो धराशाई हुआ ही, इसकी धमस से चीन, टर्की और अमेरिका भी हिल गए। पाकिस्तान के सेना प्रमुख, आईएसआई चीफ और पीएम शाहबाज शरीफ बंकरों में छिपे फिर रहे थे और ऑपरेशन सिन्दूर के बाद मुंह छिपाये फिर रहे हैं। इन तीन दिनों में पाकिस्तान केवल हारा ही नहीं, बल्कि 'उसने भारत के सामने एक डरे हुए कुत्ते की तरह सीजफायर की भीख मांगी' : माइकल रूबिन, पूर्व अधिकारी, पेंटागन। पाकिस्तान के गिड़गिड़ाने से और यह मानने से कि वह भारत के खिलाफ दुबारा कोई आतंकी हरकत नहीं करेगा, भारत ने आक्रमण रोक दिया।

सिजफायर नहीं केवल आक्रमण का विराम

अखबार और चैनल्स वाले सिजफायर शब्द प्रयोग कर रहे हैं। उन सभी पत्रकारों–सम्पादकों को यह ज्ञात होना चाहिए कि भारत ने जब युद्ध घोषित ही नहीं किया था, तो फिर युद्ध विराम अर्थात् सिजफायर का कोई औचित्य ही नहीं है। यह सैन्य अभियान ऑपरेशन सिन्दूर के अन्तर्गत चल रहा था, जिसे विराम दिया गया है, सेना ने और सरकार ने बार–बार यह कहा है कि ऑपरेशन सिन्दूर अभी खतम नहीं हुआ है, वरन यह अभी जारी है। पाकिस्तान के गिड़गिड़ाने से इसे रोका गया है। यदि पाकिस्तान दुबारा कोई आतंकी हरकत करता है, या भारत पर किसी भी तरह के आक्रमण की चेष्टा करता है, तो उसे फिर से भारत के विध्वंसक आक्रमणों का सामना करना पड़ेगा।

पाकिस्तान के 11 एयर फील्ड तबाह

1. नूर खान/चकलाला एयरबेस (रावलपिंडी) – नूर खान पर भारत के हमले ने पाकिस्तान के हवाई रसद और उच्च–स्तरीय सैन्य समन्वय के केंद्र को बाधित कर दिया। इस्लामाबाद के सबसे नज़दीकी बेस के रूप में, जिसका अक्सर वीआईपी परिवहन और सैन्य रसद के लिए उपयोग किया जाता है, इसके निष्प्रभावी होने से संघर्ष के दौरान पाकिस्तान वायु सेना (पीएएफ) नेतृत्व और इसकी परिचालन इकाइयों के बीच महत्वपूर्ण संबंध टूट गए।

2. एयर बेस रफीकी (शोरकोट)– रफीकी, एक प्रमुख लड़ाकू बेस है, जो फ्रंटलाइन लड़ाकू स्क्वाड्रनों की मेजबानी करता था, निष्क्रिय हो गया। अपने विमान आश्रयों और रनवे के बुनियादी ढांचे के विनाश ने पाकिस्तान की जवाबी हवाई कार्रवाई शुरू करने की क्षमता को काफी कमजोर कर दिया, खासकर मध्य पंजाब में। इस कदम ने प्रभावी रूप से PAF के सबसे तेज आक्रामक उपकरणों में से एक को हटा दिया।

3. मुरीद एयरबेस (पंजाब) – मुरीद को निशाना बनाकर, भारत ने एक महत्वपूर्ण प्रशिक्षण और संभावित मिसाइल भंडारण केंद्र को बाधित किया। इस हमले ने पाकिस्तान की दीर्घकालिक वायु सेना की तत्परता को कम कर दिया, पायलट प्रशिक्षण पाइपलाइन में एक महत्वपूर्ण नोड को काट दिया और भविष्य के संचालन के लिए रसद की गहराई को समाप्त कर दिया।

4. सुक्कुर एयरबेस (सिंध) – भारत द्वारा सुक्कुर एयरबेस को नष्ट करने से पाकिस्तान का दक्षिणी हवाई गलियारा कट गया। सुक्कुर सिंध और बलूचिस्तान में सेना और उपकरणों की आवाजाही के लिए आवश्यक था। इसके नुकसान ने प्रमुख रसद धमनियों को काट दिया और दक्षिण में पाकिस्तान की परिचालन सीमा को कम कर दिया।

5.सियालकोट एयरबेस (पूर्वी पंजाब) – भारतीय सीमा के करीब स्थित सियालकोट को संघर्ष के आरंभ में ही बेअसर कर दिया गया था। यह बेस जम्मू और पंजाब की ओर उड़ान भरने के लिए एक अग्रिम परिचालन मंच के रूप में काम करता था। इसके नष्ट होने से पूर्वी सीमा पर एक महत्वपूर्ण ब्लाइंड

स्पॉट बन गया, जिससे पाकिस्तानी जमीनी सेना को भारतीय हवाई प्रभुत्व के लिए चुनौती नहीं मिल सकी।

6. पसरूर एयरस्ट्रिप (पंजाब) – हालांकि छोटे पैमाने पर, पसरूर सुविधा ने फैलाव और आपातकालीन विमान संचालन में भूमिका निभाई। इसे नष्ट करके, भारत ने पाकिस्तान के सामरिक लचीलेपन को कम कर दिया और विमानों को अधिक संवेदनशील, उच्च–प्रोफ़ाइल स्थानों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर किया।

7. चुनियन (रडार/सहायता स्थापना) – चुनियन पर हमलों ने मध्य पंजाब के हवाई क्षेत्र की निगरानी के लिए महत्वपूर्ण रडार कवरेज और संचार बुनियादी ढांचे को बाधित कर दिया। इससे पाकिस्तान की प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों में एक अंतर पैदा हो गया, जिससे भारतीय विमानों को कम जोखिम के साथ गहराई से प्रवेश करने की अनुमति मिली।

8. सरगोधा एयरबेस (मुशफ बेस) – सरगोधा का विनाश एक रणनीतिक मास्टरस्ट्रोक था। पाकिस्तान में सबसे महत्वपूर्ण बेस के रूप में– कॉम्बैट कमांडर्स स्कूल, परमाणु वितरण प्लेटफ़ॉर्म और कुलीन स्क्वाड्रनों का घर–इसके विनाश ने पाकिस्तान के कमांड–एंड–कंट्रोल ढांचे को पंगु बना दिया। यह झटका परिचालन और प्रतीकात्मक दोनों था, जिसने एक अजेय PAF के मिथक को चकनाचूर कर दिया।

9. स्कार्दू एयरबेस (गिलगिट–बाल्टिस्तान) – स्कार्दू को भारत द्वारा बेअसर करने से वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास पाकिस्तान की उत्तरी निगरानी और हवाई संचालन में कमी आई। इसने उन रसद लिंक को भी बाधित किया, जो उच्च हिमालय में चीनी–पाकिस्तानी समन्वय का समर्थन कर सकते थे। उत्तरी थिएटर में रणनीतिक लाभ अब पूरी तरह से भारत का है।

10. भोलारी एयरबेस (कराची के पास) – दोहरी–उपयोग वाली नौसेना और हवाई भूमिकाओं वाले पाकिस्तान के सबसे नए एयरबेस में से एक के रूप में, भोलारी ने दक्षिणी बल प्रक्षेपण के भविष्य की महत्वाकांक्षाओं का प्रतीक था। इसके विनाश ने उन आकांक्षाओं को मिटा दिया, तटीय रक्षा समन्वय नष्ट कर दिया और कराची को आगे के हमलों के लिए असुरक्षित बना दिया।

11. जैकोबाबाद एयरबेस (सिंध–बलूचिस्तान) – जैकोबाबाद के नष्ट होने से पश्चिमी पाकिस्तान और भी अलग–थलग पड़ गया। ऐतिहासिक रूप से इसका इस्तेमाल तेजी से सैन्य तैनाती के लिए किया जाता था और यहाँ तक कि आतंकवाद के खिलाफ युद्ध के दौरान अमेरिकी सेना द्वारा भी, इसके नष्ट होने से आंतरिक गतिशीलता, आपूर्ति श्रृंखला और पाकिस्तान की पश्चिमी हवाई निगरानी बंद हो गई।

टर्की के अजेय ड्रोन पटाखे की तरह उड़ाये गए

टर्की के ड्रोन बहुत आधुनिक और एडवांस माने जाते थे। लेकिन भारत ने जिस तरह से टर्की के ड्रोन उड़ाये, उससे तो ये ड्रोन उड़ने वाले बैलून और पटाखे से अधिक प्रतित नहीं हुए। टर्की के लगभग पाँच हजार ड्रोन हवा में ही नष्ट कर दिए गए। जहाँ से ये ड्रोन ऑपरेट हो रहे थे, उस स्टेशन को भी ध्वस्त कर दिया गया, इस हमले में टर्की के दो पायलट्स मारे गए, जिसे शर्म के मारे पाकिस्तान और टर्की दोनों ही चुपचाप झेल गए।

चीन के हथियारों की कलई खुल गई

चीन की बेकार रक्षा प्रणालियों का निर्दयतापूर्वक पर्दाफाश किया गया, पाकिस्तान की चीन द्वारा आपूर्ति की गई HQ–9 और LY–80 एयर डिफेंस प्रणालियाँ पूरी तरह से बेकार साबित हुईं, और भारत के सटीक हमलों के आगे ध्वस्त हो गईं। ये रक्षा प्रणाली 100 से अधिक लक्ष्यों को ट्रैक करने का दावा करते थे, किसी भी भारतीय मिसाइल का पता लगाने या उसे रोकने में विफल रहे। लगभग 20 PL–15 मिसाइल पाकिस्तान द्वारा भारत पर दागे गए थे, चीनी J–10 सी लड़ाकू विमान भी भेजे गए, चीनी CH–4 ड्रोन भी भेजे गए, लेकिन ये सभी भारत की पुख्ता रक्षा प्रणाली के आगे फुस्स हो गए। चीन के इन सभी हथियारों के पोल खोल दिए भारतीय सेना ने।

PL 15 E Missile
HQ 9 Defence System
JF 17 fighter Jet
CH - 4 Drone
JY 27 Radar System stealth range

अमेरिका के हथियार बाजार पर सिन्दूर का कहर

अमेरिका का F16 पिछली बार अभिनन्दन ने फ्लाइंग कॉफिन कहे जाने वाले मिग–21 से उड़ा दिया था, इस बार भी F16 के मलवे बिखेर दिए गए। अमेरिका के हथियारों के बाजार पर भी बड़ी जोरदार चोट हुई है ऑपरेशन सिन्दूर के माध्यम से। अमेरिका के पैट्रीयट रक्षा प्रणाली को हम खरीदने वाले थे, लेकिन उसके बिना ही हमने कहर मचा दिया। इसका दबाब इतना जोरदार पड़ा है कि अमेरिका ने अपने हथियारों की साख बनाये रखने के लिए

और हथियार बाजार बनाये रखने के लिए आनन–फानन में गोल्डेन डोम बनाने की घोषणा कर दी। अमेरिका कभी भी इस तरह हथियारों को बनाने के पहले ही घोषणा करता हुआ दिखा नहीं था, शीतयुद्ध के काल में भी, इसका मतलब मार बहुत गहरी पड़ी है।

परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी रक्षा सिस्टम थे

परमाणु ठिकाने अमेरिका के थे और परमाणु हथियार भी अमेरिका के थे, उन ठिकानों पर रक्षा प्रणाली भी अमेरिका के थे, लेकिन सबको ध्वस्त करते हुए हमने उन ठिकानों को तबाह कर दिया। इससे अमेरिका समेत समस्त विश्व हिल गया है। भारत निर्मित हथियारों की धौंस दुनियाँ पर छा गई है।

भारतीय एयर डिफेंस सिस्टम

एयर डिफेंस सिस्टम की हमारे पास वेरायटी है। इसमें लो लेवल फायरिंग, सरफेस टु एयर मिसाइल, लॉन्ग एंड शार्ट रेंज मिसाइल, पुराना एयर डिफेंस सिस्टम भी बढ़िया काम कर रहा था, मॉडर्न डेज एयर डिफेंस सिस्टम, आकाश सिस्टम इत्यादि को मिलाकर मल्टीलेयर एयर डिफेंस सिस्टम काम कर रहा था, जिसको पार करना किसी के लिए भी कठिन था। इसके साथ सोल्डर फायर्ड वेपन्स से भी ड्रोन इत्यादि गिरा रहे थे।

S 400 का उपयोग लगभग हुआ ही नहीं

हमने ड्रोन को मार गिराने के लिए एएडी एल–70 गन का और सोल्डर फायर वेपन्स का उपयोग किया। ड्रोन की कीमत लाखों में हैं और S 400 में उपयोग होने वाले मिसाइलों की कीमत करोड़ों में है, हमने इन ड्रोन्स को हजारों की कीमत के छोटे फायर मेटेरियल्स से उड़ा दिया। यह युद्ध बहुत खर्चीला नहीं, बहुत नपा–तुला था। सारे हथियारों का बुद्धिमतापूर्वक उपयोग किया गया है। S 400 का उपयोग तो केवल कुछ गिनती के मिसाइलों को गिराने में ही किया गया है।

बड़े हथियार निर्माता के रूप में भारत

भारत ने इस तीन के युद्ध में जो व्यवसायिक, सटीक और अचूक आक्रमण दिखाया है, वह दुनियाँ को चौंका देने के लिए पर्याप्त था। हथियारों की दुनियाँ के बने–बनाए वैश्विक सोच को हिलाकर रख दिया है, वरन हमने नये रूप में परिभाषित कर दिया है। ब्रह्मोस, आकाश, आकाशतीर, S 400, सुखोई 30 MKI जैसे हथियारों ने भारत के हथियारों के बाजार को सातवें आसमान की उंचाई दे दिया।

भारत के हथियारों का ब्रांड इंडोर्समेंट

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के नाम अपने सम्बोधन में कहा भी कि ऑपरेशन सिंदूर ने नया आयाम जोड़ा है। हमने न्यू एज वारफेयर में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है। इस ऑपरेशन के दौरान हमारे मेड इन इंडिया हथियारों की प्रामाणिकता सिद्ध हुई। दुनियाँ देख रही है कि 21वीं सदी के वारफेयर में मेड इन इंडिया डिफेंस इक्विपमेंट का समय आ चुका है। प्रधानमंत्री मोदी का यह बयान भारत निर्मित हथियारों का ब्रांड इंडोर्समेंट है।

भारत– रुस और इजरायल से बेहतर सिद्ध हुआ

रूस विगत तीन वर्षों से अधिक समय से युक्रेन से युद्धरत था, इजरायल विगत डेढ़ वर्षों से अधिक समय से फिलिस्तीन और सम्बन्धित देशों से लड़ रहा है। यूक्रेन और फिलिस्तीन की तुलना में पाकिस्तान सैन्य दृष्टि से अधिक शक्तिशाली था। लेकिन भारत की सेना ने जिस तत्परता, सटीकता, व्यवसायिकता और पार्श्विक हानी के बिना सधा हुआ निशाना साधा है, वह सबको हैरान करने वाला है। जो काम रुस तीन साल में कर पाया और इजरायल डेढ़ साल में कर पाया, उससे अधिक मारक हमला हमने मात्र तीन दिन में कर के दिखा दिया।

भारतीय सेना दुनियाँ में सर्वश्रेष्ठ

हमारी सेना ने अपनी क्षमता सिद्ध कर के दिखा दिया कि हमारी सँख्या भले ही कम हो, हम दुनियाँ में तीसरे नम्बर पर हों, लेकिन हम अपनी क्षमता के अनुसार दुनियाँ में सर्वश्रेष्ठ हैं। जमीनी युद्ध में हमने कारगिल युद्ध से दुनियाँ में श्रेष्ठता सिद्ध कर दिया था। लेकिन नो–कांटेक्ट वारफेयर में भी अब हमने श्रेष्ठता सिद्ध कर दिया है। इस तीन दिवसीय अघोषित युद्ध ने यह सिद्ध कर दिया कि जबतक दुनियाँ युद्ध की घोषणा करेगी, उसके पहले ही हम पाशा पलट देने की क्षमता रखते हैं। ज्ञात हो कि भारत ने युद्ध घोषित नहीं किया था, ऑपरेशन सिन्दूर भी आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई मात्र थी, पाकिस्तान आड़े न आया होता, तो हम उसपर आगे का हमला न करते, लेकिन पाकिस्तान ने हमारे 26 शहरों पर हमले का प्रयत्न किया, कोई भी हमला सफल नहीं हो सका, हमने उसकी सारी कोशिश नाकाम कर दी और पाकिस्तान को ऐसी सबक सिखाई कि वह आने वाली पीढ़ियों तक याद रखेगा। पाकिस्तान युद्ध की घोषणा कर चुका था, युद्ध को नाम भी दे चुका था, लेकिन उसके पहले ही हमने उसको ध्वस्त कर दिया। इस कार्यवाई से भारत की सेना विश्व में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो गई है।

जो कहा वो किया ऑपरेशन सिंदूर

मृत्युंजय दीक्षित

22 अप्रैल, 2025 पहलगाम में 26–निहत्थे निर्दोष हिन्दुओं की धर्म पूछकर हत्या से पूरा देश आहत था। दुख और क्रोध दोनों चरम सीमा पर थे। गृहमंत्री अमित शाह समाचार मिलते ही घटनास्थल पर पहुँच गए। प्रधानमंत्री अपनी विदेश यात्रा समाप्त कर स्वदेश लौटे। अगले ही दिन उन्होंने मधुबनी रैली में घोषणा की कि इस बार ऐसा दंड मिलेगा, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी, इस संकल्प को उन्होंने अपने मन की बात कार्यक्रम में दोहराया। गृहमंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री के संकल्प को बल देते हुए कहा कि 'हम एक–एक आतंकी को चुन–चुन कर मारेंगे' और अंत में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि ये मेरा उत्तरदायित्व है कि देशवासी जो कुछ चाहते हैं, वह सब कुछ मोदी सरकार में होकर रहेगा। इन वक्तव्यों के पीछे सरकार और सेना के सभी संकल्पबद्ध राष्ट्रभक्त सामरिक और रणनीतिक तैयारियाँ कर रहे थे।

पहलगाम की आतंकी घटना के पश्चात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेना को सही समय, सही स्थान और सही लक्ष्य चुन कर सटीक वार करने की छूट दे दी थी। भारतीय सेना ने 6–7 मई 2025 की मध्यरात्रि को अपने पराक्रम का प्रदर्शन करके हर भारतीय का मस्तक गर्व से ऊँचा कर दिया। आज हर भारतीय नागरिक अपनी सेना के साहस को प्रणाम कर रहा है और सेना के साथ खड़ा है। जैसे ही ऑपरेशन सिंदूर के सफलतापूर्वक लांच होने की सूचना आई, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने सोशल मीडिया पर लिखा "भारत माता की जय" और उसके बाद भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में ऑपरेशन सिंदूर ट्रेंड करने लगा। भारत–पाक सीमा तथा पीओके पर 9 आतंकी ठिकानों को तबाह होते ही देश के अनेक हिस्सों में उत्साह का वातावरण बन गया।

लम्बे विचार–विमर्श और तैयारियों, कूटनीतिक पक्ष को साधने के साथ सटीक रणनीति का उपयोग करते हुए "ऑपरेशन सिंदूर" के माध्यम से भारतीय सेना ने पक्के सबूतों के साथ पाकिस्तान और गुलाम कश्मीर में स्थित आतंकी ठिकानों पर हमला कर, उन्हें तबाह कर दिया। भारत ने पंजाब प्रांत के बहावलपुर जैश–ए–मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर के ठिकाने पर जोरदार मिसाइल अटैक किया, जिससे मसूद अजहर के परिवार के 14 सदस्य मारे गये। पाकिस्तानी सेना के चीन में बने एचक्यू –9 एयर डिफेंस सिस्टम को चकमा देते हुए भारतीय सेना ने 9 आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करके भारत के सभी दुश्मनों को साफ संदेश दे दिया है कि अगर कोई उसे छेड़ेगा, तो, वह अब घर में घुसकर मारेगा। यह नया भारत है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार देश के दुश्मनों को उसी भाषा में जवाब दे रही है, जो भाषा वो समझते हैं। भारत को परमाणु हमले की धमकी देने वाले फिलहाल किसी बिल में छुपे हैं और अपने देशवासियों को कुछ बता पाने की स्थिति में भी नहीं रह गये हैं। जिन आतंकियों ने पहलगाम में निर्दोषों की हत्या करते समय उनकी पत्नियों या परिजनों से कहा था कि हम तुमको नहीं मारेंगे, जाओ मोदी को जाकर बता दो,

उनको प्रधानमंत्री मोदी ने बता दिया है कि वो सुन चुके हैं। उत्तर इतना तगड़ा और सधा हुआ दिया है कि आज पाकिस्तानी सत्ता, प्रतिष्ठान, सेना व वहाँ की खुफिया एजेंसी आईएसआई हैरान है।

ऑपरेशन सिंदूर" को मोदी सरकार में अब तक हुई स्ट्राइक्स में सबसे अलग माना जा रहा है। "ऑपरेशन सिंदूर" प्रधानमंत्री मोदी के उत्कृष्ट नेतृत्व का श्रेष्ठ उदाहरण है। यह ऑपरेशन बिना किसी दोष का अद्भुत प्रस्तुतीकरण रहा, जिसमें आतंकी ठिकानों और आतंकवादियों को छोड़कर किसी भी निर्दोष नागरिक या पाक सेना के जवान को नुकसान नहीं पहुँचाया गया और भारतीय सेना अपनी कार्यवाही को पूरा करके सकुशल घर वापस आ गई।

अब पाकिस्तान को यह समझ में नहीं आ रहा है कि वह पूरे घटनाक्रम पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करे, हालांकि पाक प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की लंबी आपात बैठक के बाद पाक का बयान आया है कि उसे भारत पर जवाबी कार्यवाही करने का अधिकार प्राप्त है। पहलगाम घटना के बाद से पाकिस्तानी सेना एलओसी पर लगातार फायरिंग कर रही है, जिसका भारतीय सेना भी पूरी बहादुरी के साथ लगातार जवाब दे रही है। भारत पाकिस्तान को लगातार चेतावनी दे रहा है कि एलओसी पर फायरिंग बंद करो, नहीं, तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो।

आतंकी ठिकानों पर हमले से आतंकी संगठनों की जड़ें हिलीं – भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के अंतर्गत पाकिस्तान और पीओके में 9 आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया है। इसमें कम से कम 120 आतंकवादियों के मारे जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है। यह सँख्या बढ़ भी सकती है। पाकिस्तान केवल 26 लोगों के ही मारे जाने का दावा कर रहा है। माना जा रहा है कि इस हमले में सबसे अधिक नुकसान जैश–ए–मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर को हुआ है और उसके परिवार के 14 सदस्यों को मार गिराया गया है।

जिन 9 ठिकानों को निशाना बनाया गया, उनमें बहावलपुर का मरकज सुभान अल्लाह यह जैश–ए–मोहम्मद का प्रशिक्षण केंद्र है। 14 फरवरी 2019 को पुलवामा में हुए हमले में इस केंद्र की मुख्य भूमिका रही है। यहाँ जैश–ए–मोहम्मद के सरगना मौलाना मसूद अजहर अपने परिवार तथा सहयोगियों के साथ रहता था और आतंकियों को प्रशिक्षित कर उन्हें भारत भेजता था। दूसरा–सबसे बड़ा हमला पंजाब के मुरिदके स्थित मरकज तैयबा पर हुआ–यह लश्कर ए तैयबा का मुख्य प्रशिक्षण केंद्र है, यहाँ आतंकियों को हर प्रकार से प्रशिक्षित किया जाता है। यहाँ पर हर वर्ष एक हजार छात्रों की भर्ती की जाती है। ओसामा बिन लादेन ने यहाँ एक मस्जिद व गेस्ट हाउस के निर्माण में आर्थिक मदद की थी तथा यहाँ 26/11 के मुंबई हमलावरों को प्रशिक्षित किया गया था। इसमें अजमल कसाब भी शामिल था। (पंजाब, पाकिस्तान) के नरावेल जिले में सरजाल तेहर कलां के शंकरगढ़ में स्थित यह जैश–ए–मोहम्मद का लांचिग पैड है। यह एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में संचालित होता है, यह सीमा से लगभग 6 किमी दूर है और यहाँ पर सुरंग निर्माण, ड्रोन आदि का संचालन सिखाया जाता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार देश के दुश्मनों को उसी भाषा में जवाब दे रही है, जो भाषा वो समझते हैं। भारत को परमाणु हमले की धमकी देने वाले फिलहाल किसी बिल में छुपे हैं और अपने देशवासियों को कुछ बता पाने की स्थिति में भी नहीं रह गये हैं। जिन आतंकियों ने पहलगाम में निर्दोषों की हत्या करते समय उनकी पत्नियों या परिजनों से कहा था कि हम तुमको नहीं मारेंगे, जाओ मोदी को जाकर बता दो, उनको प्रधानमंत्री मोदी ने बता दिया है कि वो सुन चुके हैं।

इसी प्रकार सियालकोट का महमूना जोया सेंटर, इसका इस्तेमाल हिजबुल मुजाहिदीन करता है। बरनाला का मरकज अहले हदीस यह भी लश्कर को सेंटर है। कोटली का मरकज अब्बास भी एक मुख्य आतंकी केंद्र है, जहाँ पर बड़े आतंकी सरगना घुसपैठ की योजना बनाते हैं और उन्हें सीमा पार कराने में मदद तक करते हैं। मुजफ्फराबाद का शावाई नाल्लाह कैंप भी एक बहुत बड़ा आतंकी शिविर केंद्र है। मुजफ्फराबाद में लाल किले के सामने स्थित यह जैश–ए मोहम्मद का मुख्य केंद्र है, यहाँ पर पाकिस्तानी सेना के रेंजर आतंकियों को प्रशिक्षण देते हैं। इन सभी केंद्रों पर किसी भी समय में 100 से 600 आतंकी रहते हैं।

आज यह सभी प्रशिक्षण केंद्र व लॉन्चिंग पैड ध्वस्त हो चुके हैं और पाकिस्तान में हाहाकार मचा हुआ है। भारतीय सेना का बदला पूरा हो जाने के बाद भारतीय सेना के इतिहास में पहली बार दो महिला अधिकारियों ने पूरे घटनाक्रम का पत्रकार वार्ता में विधिवत वीडियो जारी किया और ऑपरेशन सिन्दूर की पूरी जानकारी दी।

ymritvsk1973@gmail.com

पाकिस्तान में पनप रहे गृह युद्ध के हालात ?

सुरेश हिंदुस्तानी

पहलगांव में घटित आतंकी घटना के बाद भारत की ओर से की गई जवाबी कार्रवाई से एक बार फिर से पाकिस्तान हताश और निराश दिखाई दिया। इसी हताशा के चलते पाकिस्तान ने अमेरिका के समक्ष मिन्नत करके भारत की जबरदस्त कार्यवाही को युद्ध विराम में परिवर्तित करने में सफलता प्राप्त की। लेकिन इससे पाकिस्तान पर मंडरा रहे संकट का पूरा समाधान नहीं निकल सका है। भारत की ओर से स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पानी और खून एक साथ नहीं बह सकते। आतंक और वार्ता एक साथ नहीं हो सकती। इसका आशय स्पष्ट है कि भारत किसी के दबाव में नहीं है। आतंक को समाप्त करने के लिए उसका अभियान जारी रहेगा। हालांकि अब युद्ध विराम हो गया है, लेकिन चारों तरफ से बुरी तरह से घिर चुके पाकिस्तान के सामने अब नई चुनौती पैदा हो गई है। यह नई चुनौती भारत ने नहीं, बल्कि उनके अपनों ने ही पैदा की है। पाकिस्तान की शहबाज शरीफ की सरकार को राजनीतिक विरोधियों के आक्रोश का सामना करना पड़ रहा है, वहीं आम जनता भी सरकार के युद्ध विराम के फैसले से नाखुश है। आम जनता अपनी ही सरकार और सेना पर कई प्रकार के सवाल खड़े करने लगी है। कहा जाता है कि जब धुआं उठा है, तो, आग भी अपना रूप दिखा सकती है। वैसे पाकिस्तान के बारे में यह सत्य है कि उसने अपने ही देश में बारूद के ढेर स्थापित कर दिए हैं। यह बारूद के ढेर आतंकी सरगनाओं द्वारा चल रहे प्रशिक्षण शिविर हैं। जहाँ आतंकी पैदा किए जाते हैं। आज जहाँ पूरे विश्व में आतंक के विरोध में वातावरण है, वहीं पाकिस्तान आतंकियों को पालने और पोषने वाले देश के रूप में पहचान बना चुका है। यह कई बार प्रमाणित भी हो चुका है। आज भी पाकिस्तान के अंदर अंतरराष्ट्रीय तौर पर घोषित आतंकी छिप कर बैठे हैं। भारत ने ऑपरेशन सिन्दूर के तहत जिस तरह से आतंकी शिविरों पर आक्रमण किया था, उससे एक बार फिर यह सिद्ध हो चुका है कि पाकिस्तान में आतंकवादियों को पैदा करने के उद्योग चल रहे हैं। पाकिस्तान को आतंक के विरोध में कार्यवाही करने के लिए कई बार चेतावनी दी गई, लेकिन पाकिस्तान सरकार आतंकियों के विरोध में कोई ठोस अभियान नहीं चलाती। इसका कारण यह भी है कि पाकिस्तान की राजनीति को आतंकी ही संचालित करते हैं। आतंकियों द्वारा कई बार सरकार बनाने के लिए राजनीतिक दलों को समर्थन भी दिया जाता है।

जब पाकिस्तान में इमरान खान की सरकार थी, तब यही कहा जाता था कि इमरान को सेना और आतंकियों का समर्थन मिला था। आज इमरान की पार्टी विपक्ष में है। इसलिए उनकी पार्टी के कार्यकर्ता सरकार के विरोध में वातावरण बनाने में लगे हुए हैं। पाकिस्तान के अंदर राजनीतिक विद्वेष इतना है कि जो भी राजनीतिक दल सत्ता में आता है, वह अपने पूर्ववर्ती सत्ता प्रमुख को ठिकाने लगाने को ही अपना प्रमुख कार्य मानता है। अभी शहबाज शरीफ प्रधानमंत्री हैं, उन्होंने अपने से पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर कई आरोप लगाकर जेल भेजने का काम किया। पाकिस्तान में ऐसा पहली बार नहीं हुआ। ऐसा पहले भी हो चुका है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह पाकिस्तान की नियति बन चुका है। जिसके कारण पाकिस्तान के राजनीतिक दलों में बहुत गंभीर मतभेद हैं। आज पाकिस्तान में भले ही पाकिस्तान मुस्लिम लीग के नेता शहबाज शरीफ प्रधानमंत्री हैं, लेकिन पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेता बिलावल भुट्टो भी सरकार में शामिल हैं। कभी एक दूसरे के धुर विरोधी रहे यह दोनों दल बेमेल गठबंधन करके पाकिस्तान में सरकार चला रहे हैं। ऐसा इसलिए किया गया, क्योंकि इन दोनों दलों का एक ही उद्देश्य था, इमरान खान को सत्ता में आने से रोकना। सबसे ज्यादा सीट प्राप्त करने के बाद भी इमरान को विपक्ष की भूमिका से संतुष्ट होना पड़ा। अब इमरान खान के समर्थक युद्ध विराम के बाद सरकार के विरोध में अभियान छेड़े हुए हैं।

इसी प्रकार बलूचिस्तान की भूमिका के बारे में सब जानते हैं। बीएलए के सैनिकों ने पाकिस्तान की सेना पर कई बार आक्रमण करके यह जता दिया है कि वे अब पाकिस्तान के साथ नहीं रह सकते। भारत और पाकिस्तान के बीच चल रही जंग के बीच बलूचिस्तान ने भी पाकिस्तान की सेना को निशाना बना कर कई आक्रमण किए। इससे पूर्व बलूचिस्तान के लड़ाकों ने जफर एक्सप्रेस को हाईजैक करके पाकिस्तान की सरकार के समक्ष चुनौती पूर्ण हालात पैदा कर दिए थे। बलूचिस्तान लम्बे समय से पाकिस्तान से आजादी की मांग कर रहा है।

दूसरी ओर पाकिस्तान के अंदर सिंध और पंजाब में भी कई बार सरकार के विरोध में स्वर मुखरित हो चुके हैं। कहा जाता है कि इन दोनों राज्यों के साथ सरकार ने उपेक्षित व्यवहार किया है, जिसके कारण पाकिस्तान की सरकार को जनता के विरोध का सामना करना पड़ा है। यह सारी स्थिति पाकिस्तान को गृह युद्ध की ओर भी ले जा सकती है।

sureshhindustani1@gmail.com

चीनी हथियारों ने डुबा डाली पाकिस्तान की लुटिया, हार स्वीकार सीजफायर को तैयार

डॉ उमेश प्रताप वत्स

पहलगाम हत्याकांड के बाद भारतीय सेना की कार्यवाही में पाक स्थित नौ आतंकी शिविरों के बर्बाद होने पर भारत और पाकिस्तान सीमित युद्ध से खुले युद्ध की ओर बढ़ते जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने बिहार रैली में एलान किया था कि 22 अप्रैल को जम्मू–कश्मीर के पहलगाम में आतंकियों ने मासूम देशवासियों को जिस बेरहमी से मारा है, उससे पूरा देश व्यथित है। कोटि–कोटि देशवासी दुखी हैं। सभी पीड़ित परिवारों के इस दुख में पूरा देश उनके साथ खड़ा है। इस आतंकी हमले में किसी ने अपना बेटा खोया, किसी ने अपना भाई खोया, किसी ने अपना जीवनसाथी खोया है। करगिल से कन्याकुमारी तक हमारा दुख एक जैसा है। हमारा आक्रोश एक जैसा है। यह हमला निहत्थे पर्यटकों पर नहीं हुआ, अपितु देश के दुश्मनों ने भारत की आत्मा पर हमला करने का दुस्साहस किया है। मैं बहुत साफ शब्दों में कहना चाहता हूँ जिन्होंने यह हमला किया है उन आतंकियों और इस हमले की साजिश रचने वालों को उनकी कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी, सजा मिलकर के रहेगी। अब आतंकियों की बची खुची जमीन को भी मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। एक सौ चालीस करोड़ भारतीयों की इच्छाशक्ति अब आतंक के आकाओं की कमर तोड़कर रहेगी।

चौहदवें दिन भारतीय सेना के रणबाँकुरों ने अपने दूरदृष्टा प्रधानमंत्री के सुझाव को मानते हुए ऑपरेशन का नाम सिंदूर रखते हुए संकल्प लिया कि भारत की बेटियों के सिंदूर का बदला शीघ्र ही पाकिस्तान के अहंकार को चकनाचूर कर लिया जायेगा। इसी सिंदूर ऑपरेशन के अन्तर्गत भारतीय एयरफोर्स ने पाकिस्तान को सबक सिखाते हुए 6 से 7 मई की मध्य रात को 1.05 बजे से लेकर 1.30 बजे तक ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम दिया। 25 मिनट के इस ऑपरेशन में 24 मिसाइलों के जरिए नौ आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर दिया गया। इन नौ ठिकानों में से पांच पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में थे, वहीं चार पाकिस्तान में थे। इन ठिकानों में आतंकियों को भर्ती किया जाता था, उन्हें प्रशिक्षित किया जाता था और उनके दिमाग में जहर भरा जाता था। भारत का यह प्रतिशोध इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि 25 साल पहले यानी 1999 में कंधार विमान अपहरण के बाद यात्रियों के बदले रिहा किए गए आतंकी अजहर मसूद के जैश–ए–मोहम्मद का मुख्यालय भी ध्वस्त कर दिया गया है। मोस्ट वॉन्टेड आतंकी हाफिज सईद के संगठन लश्कर–ए–तैयबा का सबसे अहम और बड़ा आतंकी शिविर भी तबाह हो चुका है। दूसरों के निरपराध परिवारों को बेवजह मौत बांटने वाले अजहर मसूद का जब अपने परिवार के सदस्य सैन्य कार्यवाई में मारे गए, तो, वही जालिम मसूद अल्लाह से भीख मांग रहा था कि मुझे भी उठा लेते। इसके बाद पहलगाम में हमला करने आए आतंकियों ने जहाँ प्रशिक्षण लिया था, वह भी बर्बाद किया जा चुका है। पाक अधिकृत कश्मीर के मुजफ्फराबाद में मौजूद मरकज सैयदना बिलाल कैम्प और पाकिस्तान के सियालकोट स्थित सरजल कैम्प और महमूना जोया कैम्प, ये ऐसे तीन ठिकाने थे, जो अस्पताल–स्वास्थ्य केंद्र की आड़ में चल रहे थे। किसी को शक न हो, इसके लिए यहाँ कुछ समय इलाज होता था, बाकी समय आतंकियों को प्रशिक्षण दिया जाता था। आगे के कमरों में डॉक्टर मौजूद रहते थे और परदे के पीछे आतंकी।

भारत ने संयम रखते हुए ऑपरेशन सिंदूर में विशेष ध्यान रखा कि पाकिस्तान के सैन्य प्रतिष्ठानों, रिहाइशी इलाकों और आम नागरिकों को नुकसान न पहुँचे। पाक अधिकृत कश्मीर में पाँच कैम्प नष्ट किए गए। आपरेशन सिंदूर के दौरान सबसे पहला हमला सवाई नाला स्थित आतंक के अड्डे पर किया गया। ये लश्कर–ए–तैयबा का ट्रेनिंग सेंटर था। लाइन ऑफ कंट्रोल से 30 किलोमीटर दूर है। पहलगाम हत्याकांड में शामिल आतंकियों ने यहीं से प्रशिक्षण लिया था। सईदना बिलाल कैम्प, मुजफ्फराबाद में जैश ए मोहम्मद का यह अड्डा हथियार, विस्फोटक और जंगल सरवाइवल की ट्रेनिंग का केंद्र था। गुलपुर कैम्प, कोटली एलओसी से 30 किलोमीटर दूरी पर लश्कर–ए–तैयबा का बेसकैंप था,

जो रजौरी और पुंछ में सक्रिय था। 20 अप्रैल 2023 को पुंछ में और 9 जून 2024 को रियासी में तीर्थ यात्रियों की बस पर हमले में शामिल आतंकियों को यहीं से ट्रेंड किया गया था।

बरनाला कैम्प, भीमबर एलओसी से 9 किलोमीटर दूर है। यहाँ पर हथियार चलाने, आईईडी बम बनाने और जंगल सरवाइवल प्रशिक्षण का केंद्र था। अब्बास कैम्प, कोटली एलओसी से 13 किलोमीटर दूर है। लश्कर–ए तैयबा के फिदायीन यहाँ पर तैयार होते थे। इसी तरह पाकिस्तान के अंदर भी भारत ने चार कैम्प नष्ट किए। सरजल कैम्प, सियालकोट अंतराष्ट्रीय सीमा से 6 किलोमीटर की दूरी पर सांबा, कठुआ के सामने स्थित है। मेहमूना जोया कैम्प, सियालकोट अंतराष्ट्रीय सीमा से 12–18 किलोमीटर दूर, यह हिजबुल मुजाहिद्दीन का बहुत बड़ा कैम्प था। पठानकोट एयरबेस पर किया गया हमला इसी कैम्प से प्लान और डायरेक्ट किया गया था। मरकज तैयबा, मुरीदके यह अंतराष्ट्रीय सीमा से 18–25 किलोमीटर दूर था। 2008 मुंबई हमले के आतंकियों को यहाँ पर प्रशिक्षित किया गया था। मुंबई हमले में शामिल अजमल कसाब और डेविड हेडली को भी यहीं पर प्रशिक्षित किया गया था। मरकज सुभानअल्लाह, बहावलपुर अंतराष्ट्रीय सीमा से 100 किलोमीटर दूर था। ये जैश–ए–मोहम्मद का मुख्यालय था। यह आतंकियों की भर्ती और प्रशिक्षण का केंद्र भी था। भारतीय सेना के प्रवक्ता ने बताया कि पहलगाम हमला स्पष्ट रूप से कश्मीर में बहाल हो रही सामान्य स्थिति को बाधित करने के उद्देश्य से किया गया। जांच और सूचनाओं के आधार पर की गई इस नपी–तुली कार्रवाई का उद्देश्य आतंक के ढांचे को समाप्त करना और भारत भेजे जाने वाले संभावित आतंकियों को अक्षम बनाने पर था। भारत ने यह भी ऐलान किया कि उसने पहलगाम का बदला ले लिया है, अब वह इसे आगे बढ़ाने के मूड में नहीं है, किंतु यदि पाक इसे आगे बढ़ाता है, तो मुँहतोड़ जवाब दिया जायेगा।

यद्यपि पाकिस्तान को यह भान था कि पहलगाम घटना के बाद भारत चुप बैठने वाला नहीं है, कोई न कोई कार्यवाई अवश्य करेगा; किंतु उसने यह नहीं सोचा था कि भारत इतनी भयंकर और प्रभावी कार्रवाई करेगा कि उसके संरक्षण में पोषित बहुत ही महत्वपूर्ण आतंकी शिविरों को घर में घुसकर तबाह कर देगा। अपनी आवाम के सामने झूठी शान दिखाने के लिए तथा जनरल मुनीर के अहंकार के कारण पाक सेना ने भारत पर रात–भर तुर्किए व चीन से आयातित ड्रोन, मिसाइलें व रॉकेट सैंकड़ों की सँख्या में भारत के जम्मू क्षेत्र, पंजाब के भटिंडा, पठानकोट, अमृतसर, जालंधर, राजस्थान के जैसलमेर क्षेत्र व गुजरात के भुज आदि में लगातार दागे, जिन्हें भारत के सुदर्शन चक्र कहे जाने वाले एस–400 ने हवा में ही नष्ट कर दिया।

पाकिस्तान की कायरतापूर्ण करतूत का मुँहतोड़ जवाब देते हुए भारतीय सेना ने रफीकी, मुरीद, नूर खान, रहीम यार खान, सुक्कुर और चुनियन में पाकिस्तानी एयर बेस को बर्बाद कर दिया। भारत के हमलों में इन सभी एयर बेस को काफी नुकसान पहुँचा। इसके अतिरिक्त स्कर्दू, भोलारी, जैकोबाबाद और सरगोधा के हवाई अड्डे में भी भारी क्षति हुई। भारतीय सेना ने पसरूर और सियालकोट में रडार साइटों को भी निशाना बनाया। पाकिस्तान ने सोचा भी नहीं था कि उसे भारत से इस कदर का जवाब मिलेगा। पाकिस्तान के सैन्य ठिकानों को बर्बाद करने के लिए हमलों में हवा से प्रक्षेपित किए जाने वाले सटीक हथियारों जैसे कि हैमर हाइली एजाइल मॉड्यूलर म्यूनिशन एक्सटेंडेड रेंज, हवा से सतह पर मार करने वाला सटीक निर्देशित हथियार तथा एससीएएलपी, हवा से प्रक्षेपित की जाने वाली क्रूज मिसाइल तथा ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों का इस्तेमाल किया गया। ब्रह्मोस मिसाइल को तैनात कर भारतीय सेना ने पाकिस्तान का मनोबल रसातल तक पहुँचा दिया।

पाकिस्तान की कायरतापूर्ण करतूत का मुँहतोड़ जवाब देते हुए भारतीय सेना ने रफीकी, मुरीद, नूर खान, रहीम यार खान, सुक्कुर और चुनियन में पाकिस्तानी एयरबेस को बर्बाद कर दिया। भारत के हमलों में इन सभी एयरबेस को काफी नुकसान पहुँचा। इसके अतिरिक्त स्कर्दू, भोलारी, जैकोबाबाद और सरगोधा के हवाई अड्डे में भी भारी क्षति हुई।

पाकिस्तान की हालात ऐसी हो गई कि न निगलते बने और न उगलते। पाक सेना ने भारतीय सीमांत क्षेत्र में जितने भी अटैक किये, वे सब असफल कर दिये गये और भारतीय सेना ने पाकिस्तान में जितने भी अटैक किए, वे सब सफल रहे। पाकिस्तान को शीघ्र ही अपनी औकात दिख गई और वह सीजफायर के लिए पहले अमेरिका फिर भारत से ही गिडगिड़ाकर अपील करने लगा। शनिवार को सायं पाँच बजे सीजफायर की घोषणा हुई। आम लोगों ने चैन की सांस ली, किंतु चार घंटे के बाद ही पाकिस्तान ने फिर जम्मू– कश्मीर एवं राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में ड्रोन हमला कर सीजफायर का उल्लंघन किया। धोखेबाज पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए भारतीय सेना ने पाक द्वारा छोड़े गये लगभग चार सौ ड्रोन बर्बाद कर अपनी सतर्कता का उदाहरण प्रस्तुत किया। जब पूरा विश्व भारतीय सेना की सफल कहानी के गीत गा रहा था, तब पाकिस्तान घुटनों में सिर देकर सिसक–सिसक रोकर अपनी बर्बादी का दृश्य देख रहा था। उसके हमसफर तुर्किए व चीन भी उसका दर्द बांटने में अपनी विवशता का रोना रो रहे हैं। जब पूरा विश्व भारत के साहस, आत्मविश्वास व सुगठित योजनाओं से हतप्रभ है, तो देश में कुछ लोग यह नैरेटिव सैट करने में लगे हैं कि भारत दबाव में आकर सीजफायर के लिए तैयार हुआ है। यद्यपि देश की जनता चाहती है कि इस बार आर–पार करके पाक अधिकृत कश्मीर ले ही लेना चाहिए, किंतु हमारे प्रधानमंत्री जो सोचते हैं, उसे कर गुजरते हैं। वे पाकिस्तान को घुटनों पर लाकर इस कदर विवश कर देना चाहते हैं कि पाकिस्तान स्वयं कहे कि आप पाक अधिकृत कश्मीर ले लो और हमारी जान बख्श दो। वर्तमान में पाक को अपने अंदर से भी बलुचिस्तान आदि से चुनौती मिल रही है। बहुत जल्द ही पाक अधिकृत कश्मीर हमारा हिस्सा होगा और स्वयं पाकिस्तान ही हमारे सुपुर्द करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

भगवान गौतम बुद्ध

सिद्धांत, सनातन धर्म और इस्लामी आक्रमण

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

भगवान गौतम बुद्ध को सनातन धर्म के विरोधियों, मानवता विरोधी कार्यकर्ताओं और संगठनों द्वारा राजनीतिक तथा स्वार्थी उद्देश्यों के लिए समाज के विभिन्न वर्गों के बीच कलह और घृणा के बीज बोने के लिए उपयोग किया जा रहा है। ये मानवता विरोधी लोग भगवान बुद्ध के अपार ज्ञान और शिक्षाओं के खिलाफ सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने बौद्ध धर्म को प्राथमिकता दी, क्योंकि यह सनातन धर्म के विचारों के अनुरूप है। आइए हम उनकी प्रमुख अवधारणाओं, सनातन धर्म के साथ उनके संबंधों और इस्लाम ने बौद्ध धर्म को कैसे नष्ट किया, इस पर चर्चा करें।

भगवान बुद्ध द्वारा व्यक्त 'मध्य मार्ग' की अवधारणा

बुद्ध पूर्णिमा, गौतम बुद्ध के जन्म, ज्ञान और परिनिर्वाण का सम्मान करती है। गौतम बुद्ध ने ही बौद्ध धर्म की खोज की थी। उन्होंने कामुक भोग और कठोर तप के बीच एक मध्य मार्ग का उपदेश दिया, जो निर्वाण की ओर ले जाता है, जो अज्ञानता, लालसा, पुनर्जन्म और दुःख से मुक्त है। उनकी शिक्षाओं को आर्य अष्टांगिक मार्ग में संक्षेपित किया गया है, जो नैतिक प्रशिक्षण को ध्यान संबंधी प्रथाओं जैसे कि इंद्रिय संयम, दूसरों के प्रति दया, सचेतनता और ध्यान के साथ जोड़ता है।

बुद्ध ने आश्रित उत्पत्ति के अपने विश्लेषण को 'शाश्वतवाद' (यह विश्वास कि कुछ सार अनंत काल तक बना रहता है) और 'विनाशवाद' (यह विश्वास कि हम मृत्यु पर पूरी तरह से गायब हो जाते हैं) के बीच एक 'मध्य मार्ग' के रूप में देखा। इस दृष्टिकोण के अनुसार, लोग केवल क्षणिक मनोभौतिक पहलुओं को हासील करने की प्रबल इच्छा रखते हैं, जिन्हें अन्नत के रूप में जाना जाता है, जिसमें एक स्वतंत्र या स्थायी आत्मा का अभाव होता है। इसके बजाए बुद्ध सनातन धर्म के सिद्धांतों में विश्वास करते थे कि हमारे अनुभव में सब कुछ क्षणिक है और किसी व्यक्ति का कोई भी पहलू अपरिवर्तनीय नहीं है। रिचर्ड गोम्ब्रिच के अनुसार बुद्ध की स्थिति बस यही है कि 'सब कुछ प्रक्रिया है'।

दो चरम सीमाएँ हैं – सुखवाद (अत्यधिक कामुक सुख, भौतिकवाद, विलासिता) और तप (कठोर उपवास और आत्म–त्याग)। दोनों चरम सीमाएँ व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इसलिए मध्यम मार्ग को अपनाया जाना चाहिए। महान अष्टांगिक मार्ग अपनाएँ – सही दृष्टिकोण, सही इरादा, सही बोली, सही कार्य, सही आजीविका, सही प्रयास, सही ध्यान और सही एकाग्रता। लेकिन इस बात पर जोर न दें कि क्या अच्छा है और क्या बुरा, अन्यथा आप खुद को एक चरम सीमा पर ले जाएँगे। मूल रूप से, आपकी इच्छा जितनी अधिक होगी, आप उतना ही अधिक दुख का अनुभव करेंगे। इसमें सही होने की इच्छा शामिल है। सही होने पर जोर देना अहंकार है, अहंकार निराशा या क्रोध की ओर ले जाता है, जो दोनों ही दर्द का कारण बनते हैं। जब इच्छा समाप्त हो जाती है, तो दुख गायब हो जाता है।

भगवान गौतम बुद्ध और सनातन धर्म से उनका संबंध

अपने जागरण से पहले, बुद्ध ने सनातन धर्म के सिद्धांतों और तकनीकों में महारत हासिल कर ली थी, जिसमें योग और दर्शन भी शामिल थे। दलाई लामा के शब्दों में–'कुछ लोग मुझ पर यह दावा करने के लिए हमला करते हैं कि बौद्ध धर्म हिंदू धर्म की एक शाखा है। लेकिन यह दावा करना कि हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं, वास्तविकता के विपरीत होगा।' संदर्भ : संस्कृत रीडर 1 : संस्कृत साहित्य में एक रीडर, पृष्ठ 17, हेइको क्रेश्चमर

टी.डब्ल्यू. राइस–डेविड्स : बौद्ध धर्म, पृष्ठ 116–117, उद्धृत

'बौद्ध धर्म एक हजार साल के निर्वासन के बाद भारत में घर लौट रहा है और उसका खुले हाथों से स्वागत किया जा रहा है। औसत हिंदू की धार्मिक सहिष्णुता सकारात्मक प्रतिक्रिया में योगदान देती है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि बुद्ध और बौद्ध धर्म हिंदू चेतना में गहराई से समाए हुए हैं। बुद्ध हिंदू थे। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति और विकास हिंदू धर्म में हुआ है, जिसमें कला और वास्तुकला, प्रतिमा विज्ञान, भाषा, विश्वास, मनोविज्ञान, नाम, नामकरण, धार्मिक प्रतिज्ञा और आध्यात्मिक अनुशासन शामिल हैं.... हिंदू धर्म पूरी तरह से बौद्ध नहीं है, लेकिन बौद्ध धर्म उस लोकाचार का हिस्सा है, जो मूल रूप से हिंदू है।' बौद्ध धर्म को हिंदू विरासत का हिस्सा माना जाता है, क्योंकि बुद्ध ने कभी नहीं कहा कि वे एक नया धर्म स्थापित कर रहे हैं, बल्कि उन्होंने एक मौजूदा धर्म को संशोधित किया। बुद्ध एक हिंदू भिक्षु बन गए और फिर उन्होंने सभी को भिक्षु बनना सिखाया। उन्होंने कभी भी देवी–देवताओं का त्याग नहीं किया। उन्होंने बुद्ध (प्रबुद्ध) को प्राथमिकता दी, जैसा कि हमेशा होता था। हिंदू धर्म में हम कहते हैं – गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः, गुरुर्साक्षात परमब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः। इसका अर्थ है 'सबसे पहले गुरु हैं।' बुद्ध ने इसी बात को फिर से स्थापित किया। गुरु के बजाए उन्होंने बुद्ध का उल्लेख किया। बुद्ध एक पूर्ण विकसित प्रबुद्ध व्यक्ति को दर्शाता है। एक अन्य बौद्ध मार्ग में लिखा है, 'राखंतु सब्बा देवता, भवतु सब्बा मंगलम।' इसका मतलब है कि सभी को समृद्धि और शांति मिलनी चाहिए। वेदों में 'सर्वे सुखिनो भवन्तु' का अर्थ है 'दुनियाँ के सभी लोग खुश रहें।'

त्रिपिटक जिसे आमतौर पर पाली कैनन के रूप में जाना जाता है, शास्त्रों का एक संग्रह है, जिसमें भगवान बुद्ध की मौखिक शिक्षाएँ शामिल हैं। इसे शिक्षाओं के तीन 'टोकरियों' में बांटा गया है – अभिधम्म पिटक (दार्शनिक शिक्षाएँ), विनय पिटक (मठवासी नियम) और सुत्त पिटक (प्रवचन)।

जातक कथाएँ – जातक कथाएँ बुद्ध के पिछले जीवन के बारे में कहानियाँ हैं, जो हिंदू मान्यताओं और देवताओं से मिलती जुलती हैं। उनमें अक्सर हिंदू साहित्य के पात्र और कार्य शामिल होते हैं।

पाली कैनन संदर्भ – पाली कैनन, बौद्ध शिक्षाओं के सबसे शुरुआती संग्रहों में से एक है, जिसमें हिंदू रीति–रिवाजों और देवताओं के संदर्भ हैं, जो यह दर्शाता है कि बुद्ध का जीवन हिंदू धर्म से अटूट रूप से जुड़ा हुआ था। कर्म और धर्म की धारणाएँ, जो बौद्ध धर्म की कुंजी हैं, हिंदू दर्शन में भी उतनी ही प्रमुख हैं। ज्ञान पर बुद्ध की शिक्षाएँ हिंदू विचार का एक सुधार थीं, न कि उससे पूरी तरह अलग। उपनिषदों में जो कुछ भी कहा गया है, वह बिल्कुल वही है जो बुद्ध ने कहा था ! बुद्ध ने कभी यह दावा नहीं किया कि सभी ऋषि या संत गलत थे। उन्होंने कहा, 'मुझसे पहले कई बुद्ध हुए हैं और मेरे बाद भी कई होंगे।' बुद्ध की शरण में जाओ। और तुम्हारे अंदर एक बुद्ध है। अपने भीतर बुद्ध–स्वभाव की शरण में जाओ।

मोक्षार्थं संस्थितानां तु मोहायाखिलदेहिनाम्।
बुद्धत्वं समनुप्राप्य भविष्याम्यन्यजन्मना।।

इसका अनुवाद है – 'भ्रमित प्राणियों के लिए, तथा मुक्ति चाहने वालों के लिए, मैं दूसरे जन्म में बुद्ध के रूप में अवतार लूंगा।' संदर्भ – पद्म पुराण के अनुसार, बुद्ध विष्णु के अवतार हैं, जो मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग प्रदान करने के साथ–साथ वर्तमान प्रथाओं को बदलने के लिए जन्म लेते हैं। यह सनातन धर्म में प्रचलित धर्म की अवधारणा के अनुरूप है। 'हे विष्णु, हम आपके बुद्ध अवतार को नमन करते हैं, वह महान देव जो निर्दोष पशुओं के वध तथा दुष्ट बलि समारोहों के प्रदर्शन को रोकने के लिए यहाँ आए थे, जो समाज भ्रष्ट तथा अनुचित हो गए थे !' – देवी भागवत पुराण 10.5।

भगवान ने मत्स्य से शुरू करते हुए विष्णु के 10 अवतारों के गुणों का वर्णन किया। बुद्ध को शांत, लंबे कानों तथा गोरे रंग के, वस्त्र पहने, कमल पर बैठे हुए, जिसकी पंखुड़ियाँ ऊपर की ओर हों तथा अनुग्रह तथा सुरक्षा प्रदान करते हुए चित्रित किया जाना चाहिए। – अग्नि पुराण 49.1–8

इस्लामी आक्रमणकारियों ने बौद्ध धर्म को नुकसान पहुँचाया

मुस्लिम आक्रांताओ ने भारत में बौद्ध धर्म के अधिकांश हिस्से को निर्दयतापूर्वक नष्ट कर दिया, देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों पर हमला किया, भिक्षुओं का नरसंहार किया और पुस्तकालयों को जला दिया। उन्होंने हिंदुओं के साथ भी ऐसा ही किया, लेकिन प्राचीन भारत में हर जगह हिंदू थे, वे उन सभी को नहीं मार सके। बौद्ध धर्म मठों में अधिक केंद्रित था, क्योंकि यह भिक्षुओं पर बहुत अधिक निर्भर था और आम जनता के बीच कम व्यापक रूप से वितरित था, जिससे यह विघटन के लिए काफी अधिक संवेदनशील था।

मानवता को ध्यान में रखते हुए शांतिपूर्ण और समृद्ध दुनियाँ के लिए हिंदुओं और बौद्धों को एकजुट करने का समय आ गया है।

pankajjayswal1977@gmail.com

ललित गर्ग

शानदार जीत से भारत एशिया की एक बड़ी शक्ति बना

भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर जारी तनाव एवं युद्ध की स्थितियों के बीच भारत ने बड़ा ऐलान करते हुए सीजफायर लागू किया। चार दिन चले सैन्य संघर्ष में परिस्थितियाँ और भी ज्यादा नाजुक हो गई थीं एवं पाकिस्तान की भारी तबाही हुई। दोनों परमाणु सम्पन्न देशों के बीच के बढ़ते तनाव के बीच समझौते के बाद भले ही पाकिस्तान के विनाश का सिलसिला थम गया हो, लेकिन उसकी एक भूल भारी का सबब बन सकता है। क्योंकि भारत ने यह बड़ा फैसले लेते हुए कहा था कि भविष्य में उसकी जमीन पर किसी भी आतंकवादी हमले को भारत के खिलाफ युद्ध की कार्रवाई माना जाएगा और उसकी गोली का जवाब गोले से दिया जाएगा। पाकिस्तान की फितरत को देखते हुए भारत सरकार एवं भारतीय सेना अधिक चौकस, सावधान एवं सतर्क रहते हुए संघर्ष–विराम के लिए यदि सहमत हुई है, तो उसका स्वागत होना चाहिए। जब भारत ने पाकिस्तान को सबक सिखाकर कड़ा संदेश दे दिया, तो संघर्ष विराम को एक समझदारी भरा फैसला ही माना जायेगा। यदि पाकिस्तान ने फिर आतंकवादियों को मदद–हथियार देकर भारत पर हमले करवाये, तो, उसकी हर हरकत का जवाब पहले से ज्यादा ताकतवर, विनाशकारी एवं विध्वसंक होगा। शनिवार को हुए समझौते के कुछ ही घंटों के बाद सीज फायर के अतिक्रमण ने बता दिया कि पाकिस्तान में चुनी हुई सरकार के बजाय सेना ही समांतर रूप से सत्ता चला रही है, जिसे भारत–पाक के बीच शांति पसंद नहीं है। तभी भारत ने स्पष्ट किया है कि पाक के साथ बातचीत राजनीतिक, ईएएम स्तर पर या एनएसए के बजाय सिर्फ डीजीएमओ स्तर पर ही होगी।

पाकिस्तान को परमाणु ठिकानों पर हमले का डर सता रहा था, भय एवं डर की इन स्थितियों के बीच पाकिस्तान ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से सहयोग मांगा एवं युद्ध विराम के लिए अपनी सहमति दी, भारत ने अपनी शर्तों पर, पाकिस्तान को झटका देने के बाद इस सीजफायर पर सहमति जताई है, तो यह भारत का बड़प्पन है, उसकी बड़ी सोच का ही परिचायक है और भारत की कूटनीतिक जीत है। एक बार फिर पाकिस्तान को उसकी जमीन दिखाई गयी है। दुनियाँ ने भी भारत के सैन्य पराक्रम एवं स्वदेशी हथियारों की ताकत को देखा और समझा है। एक बानगी भर में जब पाकिस्तान ने पुंछ और राजौरी समेत रिहायशी इलाकों को निशाना बनाया, तो जवाबी कार्रवाई करते हुए भारतीय सेना ने भी पाकिस्तानी सेना के कई महत्वपूर्ण अड्डों को तबाह कर दिया। सेना ने रावलपिंडी समेत पाक सेना के 4 एयरबेस नष्ट कर दिए। पाकिस्तान की फतेह मिसाइल को हवा में ही खत्म कर दिया गया। लाहौर एवं कराची सहित पाकिस्तान में अनेक स्थानों पर भारी तबाही से सहम गये पाकिस्तान ने घुटने टेक दिये। भारत ने उसके एयर डिफेंस सिस्टम की धज्जियाँ उड़ाकर, जिस तरह उसके प्रमुख एयरबेस ध्वस्त किए,

उसके बाद उसके सामने और अधिक तबाही एवं शर्मिंदगी झेलने के अलावा और कोई चारा नहीं रह गया था।

यह ठीक है कि सैन्य टकराव रोकने की घोषणा अमेरिकी राष्ट्रपति ने की, लेकिन इसका मूल कारण तो भारत का यह संकल्प रहा कि इस बार पाकिस्तान को छोड़ना नहीं है। भारत ने संघर्ष विराम केवल सैन्य टकराव रोकने तक सीमित रखकर कूटनीति एवं राजनीतिक परिपक्वता का ही परिचय दिया है। भारत ने पाकिस्तान को सही रास्ते पर लाने के लिए उसके खिलाफ सिंधु जल समझौते स्थगित करने जैसे जो कठोर फैसले लिए, वे यथावत रहेंगे। ये रहने भी चाहिए, क्योंकि धोखा देना एवं अपनी बात से बदलना पाकिस्तान की पुरानी आदत है। इस पर यकीन के साथ कुछ कहना कठिन है कि अब वह भारत में आतंक फैलाने से बाज आएगा। उसने और खासकर उसकी सेना ने भारत के प्रति जो नफरत पाल रखी है, उसके दूर होने में संदेह है। भारतीय नेतृत्व को पाकिस्तान के प्रति अपने संदेह से तब तक मुक्त नहीं होना चाहिए, जब तक वह आतंक से तौबा नहीं करता और कश्मीर राग अलापना बंद नहीं करता।

सीजफायर की कहानी 9–10 मई की रात से शुरू होती है, जब पाकिस्तान पर करारा पलटवार करते हुए भारतीय वायुसेना ने पाक सैन्य ठिकानों पर ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल दाग दी। इस दौरान रावलपिंडी के नूरखान, चकलाला और पंजाब के सरगोधा एयरबेस को निशाना बनाया गया। यह हमला रावलपिंडी में पाकिस्तानी सेना के मुख्यालय के बेहद करीब हुआ। इसके बाद पीओके में जकोबाबाद, भोलारी और स्कार्दू एयरबेस को भी तबाह किया गया। भारत के द्वारा पाकिस्तानी एयरबेस पर हमले से बौखलाए पाक को अगला निशाना उनके परमाणु कमांड और कंट्रोल इंफ्रास्ट्रक्चर पर होने का डर सताने लगा। ऐसे में पाकिस्तान ने अमेरिका से मदद मांगी। अमेरिका पहले से दोनों देशों के संपर्क में था। मगर परमाणु की बात सुनकर अमेरिका भी हड़बड़ी में आ गया।

पहलगाम आंतकी हमले के बाद तेजी से बदले घटनाक्रम के चलते 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू होते ही पाक स्थित बहावलपुर, मुरीदके व मुजफ्फराबाद में आतंकी ठिकानों को सेना ने मिट्टी में मिला दिया। फिर एक बार भारतीय सेना प्रोफेशनल एवं सैन्य मानकों पर खरी उतरी। जिसमें वायुसेना–नौसेना की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 'ऑपरेशन–सिंदूर' की कामयाबी से बौखलाए पाक ने एलओसी समेत कई शहरों पर हमले किये, जिसे हमारे प्रतिरक्षातंत्र ने विफल किया। विदेशी डिफेंस सिस्टम के साथ मिलाकर बनायी गई कई परतों वाली प्रतिरक्षा प्रणाली ने पाकिस्तान के तमाम हमले विफल कर दिए। तमाम विदेशी रक्षा विशेषज्ञों ने इस प्रणाली की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। भारत के मारक हमलों के सामने असहाय पाकिस्तान ने अमेरिका, सऊदी अरब व चीन जैसे देशों से सीज फायर के लिए गुहार लगायी। लेकिन भारत ने अपनी शर्तों पर सीज फायर पर सहमति जतायी। प्रधानमंत्री ने दो टूक शब्दों में कहा कि सीमा पार से यदि कोई गोली चली, तो उसका जवाब गोले से दिया जाएगा।

पाकिस्तान का यह आरोप बेबुनियाद है कि तनाव की शुरुआत भारत ने की। भारत ने पाकिस्तानी सेना के ठिकानों को अभी तक निशाना नहीं बनाया है। दरअसल आतंकवाद के मामले में पाकिस्तान लंबे अरसे से दुनियाँ को गुमराह करता आया है। ताजा मामले में भी वह झूठ फैला रहा है कि भारत की स्ट्राइक उसके धार्मिक स्थलों पर हुई और इसमें आतंकी नहीं, आम नागरिक मारे गए हैं। यह झूठ दरअसल उसी साजिश का हिस्सा है, जिसके तहत आतंकियों ने टारगेटेड किलिंग करके भारत में सांप्रदायिक

तनाव फैलाने का प्रयास किया था। सच्चाई तो यह है कि धर्म को आतंक से पाकिस्तान ने जोड़ा है। आतंकवादियों को पालना–पोसना और उनके जरिए छद्म युद्ध लड़ना पाकिस्तान की पुरानी आदत रही है, लेकिन इस बार वह जिस तरह आम लोगों का इस्तेमाल ढाल की तरह कर रहा है, वह निंदनीय एवं शर्मनाक होने के साथ–साथ चिंताजनक भी है। इससे उसकी हताशा झलकती है।

भारत का मकसद आतंकवाद का खात्मा है, युद्ध नहीं है। प्रधानमंत्री ने अमेरिकी उप राष्ट्रपति जेडी वेंस को साफ बताया था कि पाकिस्तान की किसी भी हरकत की प्रतिक्रिया विनाशकारी साबित हो सकती है। निःसंदेह भारत की सटीक कार्रवाई और पाकिस्तान के हमलों को विफल बनाने से दुनियाँ में स्पष्ट संदेश गया कि भारत एशिया की एक बड़ी शक्ति है। यह भी कि भारत अपनी सुरक्षा को लेकर न केवल सतर्क है, बल्कि पाकिस्तानी हमलों को विफल बनाने की ताकत भी रखता है। भारतीय सेनाओं का उत्कृष्ट प्रदर्शन इसकी मिसाल है। आधुनिक तकनीक व मजबूत प्रतिरक्षा तंत्र के बूते भारत पाक के सैन्य प्रतिष्ठानों, हवाई अड्डों व प्रतिरक्षा प्रणाली को करारी चोट देने में सफल हुआ। पाक को इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। वहीं उसके मित्र तुर्की व चीन द्वारा दिए गए हथियारों, ड्रोन व प्रतिरक्षा प्रणाली को भारतीय सेनाओं ने नेस्तनाबूद कर दिया। हमने दुनियाँ को बताया कि हम अपनी संप्रभुता और नागरिकों की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करेंगे। पाकिस्तान के पास विकल्प बहुत ज्यादा नहीं हैं। उसकी अर्थव्यवस्था इस संघर्ष को लंबा झेल पाने में असमर्थ है, युद्ध को तो वह भूल ही जाए। इसके बाद भी अगर वह दुःसाहस करने की सोच रहा है, तो यह जरूरी हो जाता है कि उस तक पहुँचने वाली मदद को भी रोका जाए। उसे आईएमएफ से नए राहत पैकेज का इंतजार है और भारत सरकार इसका विरोध करेगी। दुनियाँ को समझ लेना चाहिए कि पाकिस्तान को मिलने वाली कोई भी मदद आखिरकार आतंक फैलाने में ही इस्तेमाल होगी।

lalitgarg11@gmail.com

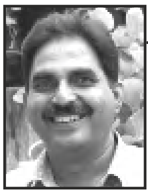

संजय सक्सेना

भारत-पाक युद्ध के बाद ट्रंप की रणनीति में बदलाव
दोस्ती या तकरार ?

डोनाल्ड ट्रंप और नरेंद्र मोदी के बीच 2017 से 2021 तक का समय भारत–अमेरिका रिश्तों के लिए सुनहरा दौर माना गया था। दोनों नेताओं की दोस्ती की मिसाल 'हाउडी मोदी' और 'नमस्ते ट्रंप' जैसे आयोजनों के जरिए दुनियाँ के सामने आई थी। ट्रंप ने उस समय मोदी को एक मजबूत नेता बताया था और भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी को महत्वपूर्ण माना था। लेकिन जब ट्रंप 2025 में एक बार फिर सत्ता में लौटे तो तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी थी। भारत के प्रति ट्रंप का रुख अब उतना दोस्ताना नहीं रह गया है। इसके पीछे कई भू–राजनीतिक, कूटनीतिक और रणनीतिक कारण हैं, जिनका प्रभाव दोनों देशों के संबंधों पर पड़ रहा है। भारत और पाकिस्तान के बीच हुए सीमित युद्ध के बाद ट्रंप के रुख में तेजी से बदलाव देखा गया। उन्होंने खुद को युद्ध विराम का नायक बताते हुए दावा किया कि उनकी मध्यस्थता के कारण ही युद्ध रुका और परमाणु संघर्ष की नौबत नहीं आई। लेकिन भारत ने इस दावे को सिरे से खारिज कर दिया और स्पष्ट रूप से कहा कि यह एक द्विपक्षीय मामला है, जिसमें किसी तीसरे पक्ष की कोई भूमिका नहीं हो सकती। भारत की इस प्रतिक्रिया से ट्रंप का अहं आहत हुआ और यही वजह है कि उनके बयानों में भारत के प्रति तल्खी साफ नजर आने लगी।

ट्रंप को यह बात भी खली कि भारत ने रूस–यूक्रेन युद्ध के दौरान तटस्थ रुख अपनाया और अमेरिका के लगातार आग्रह के बावजूद रूस के साथ अपने संबंधों को बनाए रखा। भारत ने रियायती दरों पर रूसी तेल खरीदना जारी रखा, जिससे न केवल वैश्विक तेल कीमतों पर असर पड़ा, बल्कि अमेरिका को यह भी महसूस हुआ कि भारत उसकी रणनीतिक प्राथमिकताओं में पूरी तरह साथ नहीं दे रहा है। ट्रंप भले ही रूस के प्रति व्यक्तिगत रूप से नरम रुख रखते हों, लेकिन उन्होंने हमेशा यह चाहा है कि अमेरिका के सहयोगी देश रूस और चीन के खिलाफ खुलकर खड़े हों। भारत का संतुलन बनाए रखना, BRICS और SCO जैसे मंचों में सक्रिय रहना और चीन के साथ व्यापारिक संबंधों को बनाए रखना, ट्रंप को अखरने लगा। भारत और चीन के बीच व्यापार 125 अरब डॉलर के पार चला गया है, जबकि अमेरिका चाहता है कि भारत QUAD जैसे मंचों के जरिए चीन का खुला विरोध करे।

इसके अलावा ट्रंप को पाकिस्तान के साथ अपने पुराने संबंधों को फिर से मजबूत करने की आवश्यकता महसूस हुई। अमेरिका के रणनीतिक हलकों में यह समझ है कि पाकिस्तान की भू–राजनीतिक स्थिति उसे ईरान, अफगानिस्तान और मध्य एशिया पर प्रभाव बनाए रखने का जरिया बना सकती है। चीन और रूस के करीब गए पाकिस्तान को वापस अपनी ओर खींचने की रणनीति के तहत अमेरिका ने IMF से पाकिस्तान को 2.4 अरब डॉलर का बेलआउट पैकेज दिलवाया। भारत ने इस पर आपत्ति जताई और कहा कि यह धन आतंकवाद को बढ़ावा देने में इस्तेमाल हो सकता है। लेकिन ट्रंप प्रशासन ने इस चेतावनी को नजरअंदाज करते हुए पाकिस्तान का समर्थन किया। यह घटनाक्रम भारत के लिए संकेत था कि अमेरिका अब पाकिस्तान को फिर से रणनीतिक साझेदार के रूप में देख रहा है।

ट्रंप ने भारत की 'आत्मनिर्भर भारत' नीति को भी अपने व्यापारिक हितों के खिलाफ माना। उन्होंने भारत को टैरिफ किंग कहते हुए आलोचना की और भारतीय निर्यात पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगा दिया। भारत और अमेरिका के बीच व्यापार घाटा 30 अरब डॉलर से अधिक है और ट्रंप को यह

संतुलन खटकता है। भारत अपने बाजार की रक्षा के लिए अमेरिकी उत्पादों पर भारी टैरिफ लगाता है, जैसे हार्ले डेविडसन मोटर साइकिल, बादाम और सेब पर 50 से 100 प्रतिशत तक का शुल्क। ट्रंप का मानना है कि यह अमेरिकी व्यापार के लिए नुकसानदायक है और भारत को अपने नियमों में ढील देनी चाहिए। लेकिन भारत ने साफ कर दिया कि व्यापार समझौते तभी होंगे, जब वे पारस्परिक रूप से लाभकारी होंगे।

ट्रंप ने एप्पल के सीईओ टिम कुक को भी सलाह दी कि वे भारत में आईफोन फैक्ट्रियों का विस्तार न करें और अमेरिका में ही उत्पादन बढ़ाएँ। हालांकि एप्पल ने भारत में अपने निवेश को बनाए रखा, क्योंकि भारत न केवल एक बड़ा बाजार है, बल्कि सस्ते श्रम और व्यापारिक अवसरों की दृष्टि से आकर्षक गंतव्य भी है। भारत ने हाल के वर्षों में सौर उपकरणों, इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य वस्तुओं पर आयात शुल्क बढ़ाया है, ताकि घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहन मिल सके। यह कदम ट्रंप की अमेरिका फर्स्ट नीति से टकराता है, क्योंकि इससे अमेरिकी कंपनियों को नुकसान होता है। भारत के वैकल्पिक व्यापार समझौते जैसे यूएई, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन के साथ समझौते और RCEP में फिर से विचार भारत की स्वतंत्र नीति को दर्शाते हैं, जो अमेरिका के लिए असहज करने वाली है।

डोनाल्ड ट्रंप के व्यक्तित्व में यह बात प्रमुख रही है कि वे अंतरराष्ट्रीय राजनीति को भी एक व्यापारिक सौदे की तरह देखते हैं। वे यह मानते हैं कि यदि किसी मुद्दे पर कोई नेता उनकी बात नहीं मानता या उनके प्रभाव को नकारता है तो वह उनका विरोधी है। भारत ने जिस तरह से पाकिस्तान के साथ युद्धविराम के लिए ट्रंप की मध्यस्थता को खारिज किया, वह ट्रंप के लिए सीधा झटका था। वह चाहते थे कि भारत भी पाकिस्तान की तरह उनके प्रयासों की सराहना करे, लेकिन भारत ने न केवल चुप्पी साधी, बल्कि बाद में यह स्पष्ट कर दिया कि ट्रंप की कोई भूमिका नहीं थी। यह घटनाक्रम ट्रंप को निजी रूप से आहत कर गया और इसके बाद उनके बयानों में भारत के प्रति तल्खी और पाकिस्तान के प्रति नरमी का स्पष्ट अंतर देखा गया।

ट्रंप ने कश्मीर मुद्दे पर भी कई बार मध्यस्थता की बात की है, जिसे भारत ने बार–बार खारिज किया। नरेंद्र मोदी ने देश को संबोधित करते हुए कहा कि अब पाकिस्तान से बात केवल पीओके और आतंकवाद पर ही होगी। इस बयान को अमेरिका में अच्छी नजरों से नहीं देखा गया, क्योंकि यह स्पष्ट रूप से ट्रंप की कूटनीतिक कोशिशों को नकारने जैसा था। ट्रंप के लिए यह न केवल राजनीतिक बल्कि व्यक्तिगत अस्वीकार्यता भी थी, क्योंकि वे खुद को दुनियाँ का सबसे प्रभावशाली सौदेबाज मानते हैं।

इन तमाम मुद्दों के बीच भारत ने अपनी विदेश नीति की स्वतंत्रता बनाए रखी है और यह बात ट्रंप की अमेरिका फर्स्ट नीति से टकराती है। ट्रंप चाहते हैं कि जो देश अमेरिका के रणनीतिक साझेदार हैं, वे उसकी प्राथमिकताओं को प्राथमिकता दें, लेकिन भारत ने अपनी नीतियों को पूरी तरह स्वायत्त रखा है। भारत का G20, I2U2, BRICS, SCO जैसे मंचों में नेतृत्व करना, अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर निर्णय लेना और किसी एक ध्रुव पर निर्भर न रहना अमेरिका के लिए एक चुनौती बन गया है। ट्रंप को यह लगता है कि भारत अब वह सहयोगी नहीं रहा, जो अमेरिका के हर निर्देश पर चले, और यही वजह है कि उनका रवैया कठोर होता जा रहा है।

इस पृष्ठभूमि में यह समझना जरूरी है कि आने वाले समय में भारत और अमेरिका के संबंध किस दिशा में जाएंगे। यदि ट्रंप की नीति कठोर बनी रही और भारत अपनी स्वतंत्रता पर अडिग रहा, तो यह दूरी और बढ़ सकती है। लेकिन दोनों देशों के बीच आर्थिक, सामरिक और रणनीतिक हित इतने गहरे हैं कि संवाद और सहयोग की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है। भारत और अमेरिका दोनों दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए एक–दूसरे के पूरक हैं। यदि दोनों देश आपसी मतभेदों को पार करके समान हितों की पहचान कर पाएँ, तो यह साझेदारी फिर से नई ऊँचाइयों को छू सकती है। लेकिन फिलहाल के हालातों को देखकर यही कहा जा सकता है कि ट्रंप की आँखों में भारत अब पहले की तरह नहीं भाता और इसके पीछे केवल एक कारण नहीं बल्कि पूरा अंतरराष्ट्रीय समीकरण खड़ा है, जिसे केवल समय ही सुलझा सकता है।

skslko28@gmail.com

लव जिहादियों के निशाने पर मध्यप्रदेश की बेटियाँ !

क्या फिर से घरों में लौट जाएंगी आत्मविश्वास से भरी स्त्रियाँ ?

प्रो. संजय द्विवेदी

समाज, शिक्षण संस्थानों और सरकार के तंत्र पर बहुत गहरे भरोसे पर ही 'साधारण लोग' अपनी बेटियों को कस्बों, शहरों, महानगरों में पढ़ने या नौकरी करने के लिए भेजने लगे हैं। यह बिलकुल बदले हुए माता–पिता हैं, जो अभावों में रहते हैं, लेकिन अपनी बच्चियों के सपनों में बाधक नहीं बनना चाहते हैं। बदलते हुए समय में सरकारें भी 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' के नारे लगा रही हैं। स्त्रियों के लिए अनेक प्रोत्साहनकारी योजनाएँ भी चलाई जा रही हैं। उन्हें आरक्षण, साईकिल देने से लेकर फीस माफी जैसे तमाम प्रयास हो रहे हैं। लेकिन मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल और कई स्थानों से आ रही खबरों से कलेजा फट जाता है। मुस्लिम युवकों का एक संगठित गिरोह लड़कियों से धोखाधड़ी कर उनके अश्लील वीडियो बनाता है, मारपीट करता है, नशाखोरी कर देह शोषण करता है। इस काम में मददगारों की पूरी चेन शामिल है। आखिर हमारी बेटियाँ कहाँ जाएँ? किस भरोसे पर उन्हें आकाश में उड़ने की आजादी दी जाए? मैं अखबारों में छपे आरोपी के बयान से हतप्रभ हूँ, जिसमें वह अपने कुकृत्यों को 'सबाब' (पुण्य कार्य) बता रहा है। यह कैसी दुनियाँ और कैसा असभ्य समाज हम बना रहे हैं? वो कौन लोग, विचार और मानसिकताएँ हैं, जो युवाओं में अन्य धर्मावलंबियों के प्रति ऐसी भावनाएँ भर रही हैं। हालांकि भोपाल के शहर काजी और अन्य मुस्लिम धर्मगुरुओं ने आगे आकर इन घटनाओं की निंदा की है और इसे इस्लाम विरोधी कृत्य बताया है। किंतु घटना में शामिल आरोपियों पर अपने किए पर कोई हिचक नहीं है और हर दिन एक नया मामला पेश हो जाता है।

धोखाधड़ी, मारपीट, बलात्कार और उसके वीडियो बनाकर ब्लैकमेल करना अगर किसी युवा को 'सबाब' का काम लगता है, तो ऐसे मनोविकारियों का इलाज क्या है? क्या ऐसी मानसिकता के लोग किसी सभ्य समाज में रहने योग्य हैं? भोपाल की घटना न देश की अकेली है, न पहली। केरल से बहुचर्चित हुआ शब्द 'लव जिहाद' अब एक सच्चाई है। फिल्म 'द केरल स्टोरी' इसे विस्तार से बताती है। भोपाल इन कहानियों का गवाह रहा है। यहाँ तक कि भोपाल के एक महाविद्यालय को भी कुछ साल पहले सरकार को इन्हीं कारणों से स्थानांतरित करना पड़ा। दो विपरीत पंथ को मानने वाले युवाओं का दिल मिल जाना, शादी हो जाना बहुत सामान्य बात है। संकट यह है कि धोखाधड़ी, पहचान छिपाकर रिश्ते बनाने के लिए मजबूर करने वाली मानसिकता कहाँ से आती है ? जैसा कि भोपाल का एक आरोपी कहता है, 'उसे पता होता तो, वह लड़कियों का वीडियो वायरल कर देता।' यह दुस्साहस और मनोविकार कैसे आता है, इसे समझना जरूरी है।

'स्त्रियों की सुरक्षा का मुद्दा' – हमारे समाज में लंबी गुलामी के कालखंड के कारण स्त्रियाँ पर्दा, अशिक्षा और उपेक्षा की जकड़नों में रहीं। आजादी के इन सालों में आए परिवर्तन में वह हर क्षेत्र में खुद को साबित कर चुकी हैं। अपनी योग्यता से उसने यह सिद्ध कर दिया है कि वह किसी मायने में कम नहीं। सफलता की इन कहानियों ने माता–पिता और समाज को भी बदला है। गाँव–गाँव से, कस्बों से अभिभावक बेटियों को पढ़ने और अपने सपनों में रंग भरने के लिए बाहर भेज रहे हैं। ऐसी घटनाएँ महिलाओं के सशक्तिकरण की रफ्तार में कुछ कमी ला सकती हैं।

इसलिए समूचे समाज को ऐसी घटनाओं के विरुद्ध एकजुट होकर प्रतिरोध करना चाहिए। राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों, सभी धर्मों और पंथों के अग्रणी जनों को सामने आकर इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के संस्थागत उपायों पर बात करनी चाहिए।

'अश्लील सामग्री मुक्त भारत बने' – मोबाइल संचार के माध्यम से अश्लील सामग्री का कारोबार चरम पर है। भारत को अश्लील सामग्री मुक्त देश बनाने के लिए कड़े कानूनों की आवश्यकता है। ऐसी सामग्री निर्मित करने और उसका प्रसारण करने वालों के लिए कड़े प्रावधान हों। क्योंकि यह देश के बेटी–बेटियों और बच्चों के भविष्य का सवाल है। अभिभावकों को भी चाहिए कि वे अपने बच्चों के साथ मोबाइल के उचित–अनुचित प्रयोगों पर चर्चा करें। उन्हें समय दें और मोबाइल को ही उनका शिक्षक और मित्र न बनने दें। छोटी बच्चियों के साथ यौन अपराध की घटनाएँ बता रही हैं कि हमारे समाज में विकार कितना बढ़ गया है।

'भोपाल की घटना के सबक' – भोपाल की घटना नशाखोरी, धोखाधड़ी, पांथिक उन्माद, अश्लील वीडियो, संगठित अपराध और मनोविकार का संयुक्त उदाहरण है। इस घटना के बाद राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग भी सक्रिय हुए हैं। मध्यप्रदेश सरकार ने लव जिहाद से जुड़े मामलों की जांच हेतु एसआईटी गठित कर दी है। उम्मीद की जानी चाहिए कि भोपाल एक ऐसा उदाहरण बनेगा कि जिससे स्त्री सुरक्षा की नई राह प्रशस्त होगी। पांथिक उन्मादियों और विकृत मानसिकता से भरे युवकों को कठोर संदेश देना बहुत जरूरी है। वरना 'बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओ' के संकल्प जुमले रह जाएंगे। इतिहास की लंबी गुलामी के अंधेरे को चीर कर भारतीय स्त्री एक बार फिर अपने सामर्थ्य की कथा लिख रही है, उसे फिर चाहारदीवारियों में कैद करने को कुत्सित प्रयासों को सफल न होने देना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है।

(लेखक भारतीय जन संचार संस्थान–(आईआईएमसी) के पूर्व महानिदेशक हैं।)

मजहबी शिक्षा
जन्नत नहीं जहन्नुम की ओर ले जा रही है

प्रो. संजय द्विवेदी

मजहबी मौलाना मजहबी आयतों से इस्लामिक समाज को अन्य समाज के प्रति क्रूर तो बनाते ही हैं, साथ ही साथ जन्नत की कल्पना में उनके वर्तमान जीवन को जहन्नुम भी बना रहे हैं। एक बात सोचने वाली है कि यदि आसमानी ताकत ने गैर इस्लामिक समाज को जीने का अधिकार दिया ही नहीं और आसमानी ताकत ही सर्वस्व है, तो गैर इस्लामिक समाज का जन्म इस धरती पर होता ही क्यों है? जिन इस्लामिक आतंकियों ने भारतीय नागरिकों की पैंट उतरवाकर देखा कि खतना हुआ है या नहीं तो, खतना जन्म से ही क्यों नहीं होता, जो मौलाना बहत्तर हूरों की कल्पना में इस्लामिक नौजवानों को मरने या मारने के लिए प्रेरित करते हैं, वही मौलाना उनकी बेवाओं या विधवाओं के साथ क्या भला करते हैं?

हिंदुस्तान के नागरिक को अपनी चेतना जाग्रत करनी चाहिए, भारत सरकार और भारतीय सेना तो देश की सुरक्षा एवं आत्मसम्मान के लिए सजग है, पर भारतीय नागरिक अभी भी चिरनिद्रा में हैं। मजहबी शिक्षा कहती है कि गैर मुस्लिमों का सब कुछ तुम्हारा है, चाहे सहमति से या असहमति से, अनेकों बार देखा गया है कि गैर इस्लामिक समाज मानतावाद के चलते मजहबी समाज की मदद भी करता है, उन्हें व्यापार भी देता है, पर जब बात मजहबी एकजुटता की आती है, तो पूरा मजहबी समाज गैर इस्लामिक समाज के विरुद्ध खड़ा हो जाता है। मजहबी देशों की बात तो छोड़ ही दें, भारत का कटटरपंथी समाज भी मजहब के नाम पर भारत के विरुद्ध खड़ा दिखाई पड़ता है। अभी हमने तुर्की का क्रियाकलाप देख ही लिया है, जिसके आर्थिक तंत्र का बहुत बड़ा भाग भारतीय पर्यटन से संचालित होता है, वही तुर्की इस्लाम के नाम पर पाकिस्तान के साथ खड़ा है। सोचो, समझो और निजी हितों को त्याग कर अपने राष्ट्र सुरक्षा की ओर ध्यान केंद्रित करो।

divyelekh@gmail.com

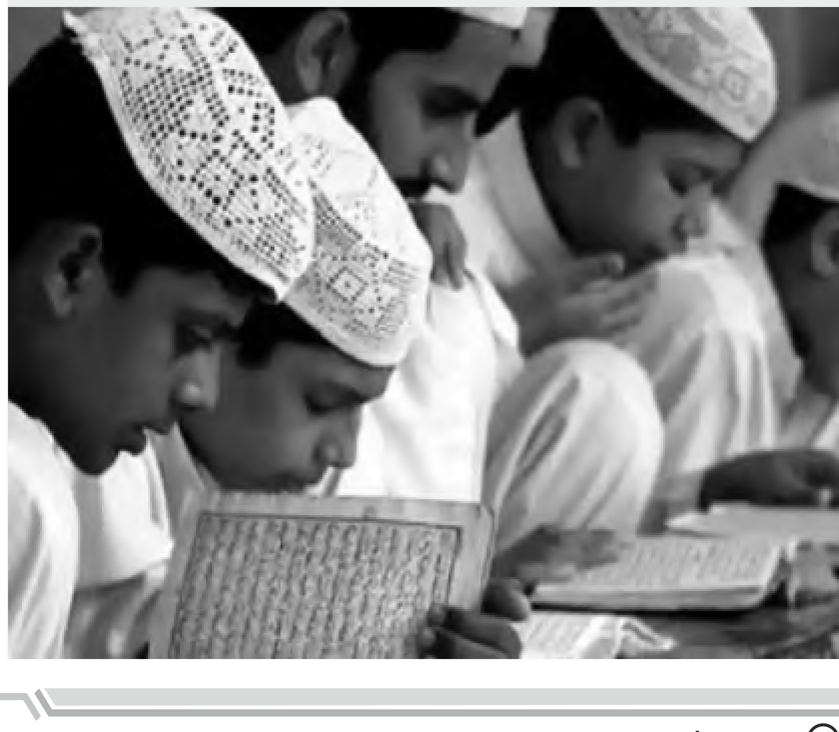

गर्मियों का एनर्जी ड्रिंक है सत्तू

गर्मियों की शुरुआत होते ही देशी पेय सत्तू का ही ध्यान आता है। गर्मी में सेहत और स्वाद के साथ ही औषधीय गुणों में भी अव्वल पाया जाता है सत्तू। सत्तू का नाम सुनते ही आपको अपना बचपन याद आता है न। जैसे ही गर्मियों के मौसम का आगमन होता था जौ, चना, गेहूँ इत्यादि फसल पक कर तैयारी होती थी। गाँवों में सत्तू बनाने की तैयारी प्रारंभ हो जाती थी। आज फास्टफूड का जमाना है। न तो किसी के पास खाना बनाने का पर्याप्त समय है और न ही आराम से खाना खाने का। इस भागमभाग वाली जिंदगी में लोगों को अच्छा स्वास्थ्य तो चाहिए, पर पिछले 15 से 20 वर्षो में कोल्ड ड्रिंक्स, फास्टफूड, एनर्जी ड्रिंक का ऐसा समय आया कि हमारा समाज बाजारवाद और फर्जी सेलब्रेटीयों के चक्कर में फंसकर बिना विचार किए पैकेट बंद, बोतल में बंद आहारों की ओर तेजी से आकर्षित हुआ और फास्टफूड के नाम पर मैगी, चाउमीन, चिप्स, कोल्ड ड्रिंक्स जैसे नुकसानदायक भोज्य पदार्थ को बड़े चाव से खाने लगा, जबकि हमारे पूर्वजों, ऋषि मुनियों ने विचारपूर्वक प्रत्येक मौसम और देश काल के अनुसार ग्राह्य आहार के विषय बताया है।

बिहार, उत्तरप्रदेश, झारखंड सहित देश के विभिन्न हिस्सों में प्रमुख आहार रहा है सत्तू। बीच के कुछ वर्षों में लुप्त प्रायः सा दिखने लगा था, लेकिन नया नौ दिन पुराना सौ दिन के तर्ज पर एक बार फिर तेजी से चलन में आ रहा है सत्तू। जिस कोल्ड ड्रिंक, एनर्जी ड्रिंक, पैक्ड फूड को हम अमृत समझ खा–पी रहे थे, अब उनकी सच्चाई सामने आने लगी है। स्वास्थ्य के लिए जागरूक जनता अब कुछ–कुछ देशी का महत्व समझने लगी है।

ग्रीष्म ऋतु में सत्तू का सेवन –प्रचलन हमेशा से ही भारत वर्ष में रहा है, सत्तू के बारे में आयुर्वेद सहिंताओं में काफी वर्णन उपलब्ध है। अष्टांग हृदय के सूत्रस्थान में बताया गया है कि सभी प्रकार के सत्तू लघु होते हैं, अर्थात पचने में हल्के होते हैं। सत्तू ऐसा फास्टफूड है, जो किसी कथित फास्टफूड से तेजी से बन सकता है और कहीं भी लेकर आसानी से जाया जा सकता है, कोई मौसम के कारण खराब होने डर नहीं होता। इस तरह सत्तू फास्टफूड के साथ एनर्जी ड्रिंक्स और सुपरफूड भी है।

सत्तू के लाभ :–

- सत्तू भूख प्यास, थकावट, नेत्ररोग तथा घाव को नष्ट करता है।
- यह तृप्ति कारक, बल कारक है, अर्थात तुरंत एनर्जी देने वाला होता है।
- मधुमेह रोगियों के लिए, पेट के रोगियों के लिए लाभकारी होता है।
- अगर आप मोटे हैं, तो जौ के सत्तू का सेवन करें।
- पतले हैं, तो गेहूँ के सत्तू का सेवन करें।

सत्तू लेने की सावधानियाँ

- सत्तू दिनभर में एक बार ही लेना चाहिए।
- सत्तू को रात में नहीं खाना चाहिए
- खाने के तुरंत बाद और तुरंत पहले नहीं लेना चाहिए
- सत्तू को आंटा की भांति सान कर या चबा–चबा कर नहीं खाना चाहिए। सत्तू को घोलकर पीना ही उचित बताया गया है।
- अधिक मात्रा में भी सत्तू का सेवन नहीं करना चाहिए।

सत्तू निर्माण की विधि

जौ, चना, मसूर, गेहूँ आदि को धूप में सुखाने के बाद भूंजकर पीस लिया जाता है, जिसे सत्तू कहते हैं। देश के विभिन्न भागों में अलग–अलग प्रकार से सत्तू बनाया जाता है, लेकिन सर्वाधिक प्रचलित सत्तू जौ और चने का है।

पर्थ में हिंदू नेता एकजुट हुए, व्यापक एकता और प्रभाव का आह्वान किया

एक गतिशील और जीवंत ऑस्ट्रेलिया का निर्माण करें

विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित 8वां ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय हिंदू सम्मेलन ऑस्ट्रेलिया इंक और इसके पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया चैप्टर द्वारा डक्सटन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था। होटल, पर्थ, शनिवार, 3 मई 2025। 'गतिशील समुदाय : जीवंत ऑस्ट्रेलिया' विषय पर सम्मेलन में 230 से अधिक लोग शामिल हुए। 40 से अधिक हिंदू मंदिरों, संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले देश भर के प्रतिनिधि सांस्कृतिक संघ और युवा समूह के लोग भी थे। प्रतिनिधियों ने ऑस्ट्रेलिया के समृद्ध बहुसाँस्कृतिक परिदृश्य को प्रतिबिंबित किया, जिसकी जड़ें 20 देशों में फैली हुई हैं। भारत सहित नेपाल, भूटान, बाँग्लादेश, मॉरीशस, इंडोनेशिया, श्रीलंका, सिंगापुर, मलेशिया, केन्या, दक्षिण अफ्रीका, यूनाइटेड किंगडम, फिजी और बहुत कुछ। विशिष्ट अतिथि और सरकारी भागीदारी। सम्मेलन में कई प्रमुख गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे–

- महामहिम गोपाल बागले, ऑस्ट्रेलिया में भारत के उच्चायुक्त
- माननीय. डॉ टोनी बूटी, अटॉर्नी जनरल और वाणिज्य, ट्रेजरी, अंतर्राष्ट्रीय मंत्री शिक्षा और बहुसांस्कृतिक रुचियाँ
- माननीय. डॉ. परविंदर कौर एमएलसी, मा. डॉ. जगदीश कृष्णन विधायक

प्रमुख घोषणाएँ एवं परिणाम

- **HOTA WA (हिंदू संगठन, मंदिर और संघ) का शुभारंभ** – एक सहयोगी WA हिंदू समुदाय को एकजुट करने, सरकार और समाज के साथ रणनीतिक रूप से जुड़ने के लिए।
- **हिंदू यूथ ऑस्ट्रेलिया** – पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया चैप्टर का शुभारंभ–अगले को सशक्त बनाना।

हिंदू नेताओं की पीढ़ी

- विश्व हिंदू आर्थिक मंच 2025 का प्रचार–2–3 अगस्त को एडिलेड में आयोजित किया जाएगा।
- 2025 ऑस्ट्रेलिया में हिंदुओं की उपलब्धियों और योगदान को प्रदर्शित करने के लिए संयुक्त संकल्प।
- राष्ट्रीय मीडिया और सार्वजनिक मंचों के माध्यम से राष्ट्रीय सहयोग और प्रेरणा।
- दक्षिण ऑस्ट्रेलिया, न्यू साउथ वेल्स, क्वींसलैंड और विक्टोरिया के नेताओं ने सफलता की कहानियाँ साझा कीं।
- HOTA मॉडल, जिसने देश भर में हिंदू समुदायों को एकजुट और सशक्त बनाया है।
- इन उपलब्धियों से प्रेरित होकर, WA ने एक प्रमुख उपलब्धि को चिंह्नित करते हुए आधिकारिक तौर पर अपना स्वयं का HOTA चैप्टर लॉन्च किया, जो मील का पत्थर है।
- पूरे आयोजन में माहौल साझा उद्देश्य, सहयोग और आशावाद का था।
- सुब्रमण्यम राममूर्ति, विहिप ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि 'यह एक सम्मेलन से कहीं अधिक था – यह सामुदायिक परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक था'। 'हम न केवल निर्माण कर रहे हैं ईंट और पत्थर के मंदिर लेकिन विश्वास, सहयोग और दूरदर्शिता के समुदाय।'
- विश्व हिंदू परिषद ऑफ ऑस्ट्रेलिया इंक के बारे में विश्व हिंदू परिषद ऑफ ऑस्ट्रेलिया इंक एक 35 वर्षीय राष्ट्रीय गैर–लाभकारी संस्था है, जो समर्पित है।
- हिंदू धर्म को बढ़ावा देना, सांस्कृतिक पहचान का पोषण करना और समुदाय को मजबूत करना।
- सेवा, शिक्षा और सहयोग। इसका कार्य युवा विकास, अंतरधार्मिक संवाद, वकालत और आध्यात्मिक जुड़ाव है।

- ❖ डिप्टी लॉर्ड मेयर ब्रूस रेनॉल्ड्स, पर्थ शहर
- ❖ मेयर पैट्रिक हॉल, कैनिंग शहर
- ❖ मेयर लोगान के हॉवलेट, कॉकबर्न शहर
- ❖ मेयर टेरेसा लिन्स, गोस्नेल्स शहर
- ❖ सुश्री केट रोलैंड्स, कार्यकारी निदेशक, बहुसांस्कृतिक हितों का कार्यालय WA
- ❖ इंस्पेक्टर डॉन इमानुएल–स्मिथ एपीएम, डब्ल्यू. पुलिस कम्युनिटी एंगेजमेंट डिवीजन
- ❖ सुश्री कैथरीन शेफर्ड, कार्यकारी निदेशक, राज्यव्यापी सेवाएँ, शिक्षा विभाग WA

इन नेताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया और प्रमुख विषयों पर चर्चा की अध्यक्षता की :–

- ❖ सरकारी एजेंसियों के साथ काम करना
- ❖ हिंदू संगठनों, मंदिरों और संघों के बीच सहयोग
- ❖ विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले हिंदुओं को एक साथ लाना
- ❖ भावी हिंदू नेतृत्व का विकास करना

मुख्य पता एवं डेटा अंतर्दृष्टि एक सम्मोहक संबोधन में श्रीमती वीएचपी डब्ल्यू ए की अध्यक्ष प्रवीणा मित्तल ने प्रमुख जनगणना आंकड़े साझा किए। ऑस्ट्रेलिया में हिंदू समुदाय के योगदान को रेखांकित करना– "2021 की जनगणना के अनुसार 64 प्रतिशत से अधिक हिंदुओं के पास विश्वविद्यालय की डिग्री है – इसकी तुलना में राष्ट्रीय औसत 26 प्रतिशत। लगभग 32 प्रतिशत योग्य पेशेवर हैं, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर यह 24 प्रतिशत है। औसत हिंदू घरेलू आय +2,461 प्रति सप्ताह है, जो ऑस्ट्रेलियाई औसत +1,746 से काफी ऊपर है, फिर भी संसद, न्याय पालिका, सार्वजनिक सेवा, पुलिस, शिक्षा और मीडिया में हिंदू प्रतिनिधित्व अनुपातहीन रूप से कम रहता है।

VHPMedia@vhp.org.au
vigyananand.ico@gmail.com

विहिप-दुर्गावाहिनी मालवा प्रांत का प्रांतीय शौर्य प्रशिक्षण सम्पन्न

मंदसौर। विश्व हिंदू परिषद दुर्गा वाहिनी मालवा प्रांत के प्रांतीय शौर्य प्रशिक्षण वर्ग 2 से 9 मई तक सरस्वती शिशु मंदिर सैनिक स्कूल, मंदसौर में आयोजित किया गया। वर्ग के उद्घाटन सत्र में आनंद प्रकाश गोयल केंद्रीय सह मंत्री व अखिल भारतीय सह धर्मप्रसार प्रमुख, विनोद जी शर्मा विश्व हिंदू परिषद मालवा प्रांत मंत्री एवं मातृ शक्ति दुर्गा वाहिनी के पालक, वर्ग की प्रमुख एवं दुर्गा वाहिनी प्रांत संयोजिका ज्योति प्रिया शर्मा उपस्थित रहीं।

सात दिनों में मातृशक्ति की राष्ट्रीय सह संयोजिका श्रीमती सरोज सोनी, श्रीमती पिंकी पंवार–राष्ट्रीय सह संयोजिका दुर्गावाहिनी, क्षेत्र संगठन मंत्री जितेंद्र सिंह पंवार, डा. माला सिंह ठाकुर, प्रांत संगठन मंत्री खगेंद्र जी भार्गव, प्रांत संयोजिका सुश्री ज्योति शर्मा का बौद्धिक हुआ। वर्ग की प्रमुख संचालन टोली एवं शिक्षार्थी बहनें उपस्थित रहीं। वर्ग की प्रस्तावना वर्ग प्रमुख ज्योति प्रिया शर्मा दुर्गावाहिनी प्रांत संयोजिका ने रखी। सत्र का संचालन सुश्री निहारिका ठाकुर ने किया। वर्ग में महाप्रबंधक श्रीमती टीना शर्मा, बौद्धिक प्रमुख सुश्री मानसी उपाध्याय, मुख्य शिक्षिका जागृति कुंभकार रहीं। वर्ग की कुल संख्या 265 शिक्षार्थी, 30 शिक्षिका सहित 295 रही।

सामूहिक चर्चा करके कार्य करने से संगठन यशस्वी होता है : बजरंग लाल बागड़ा

विहिप के प्रचार–प्रसार विभाग की अखिल भारतीय बैठक 16–17–18 मई 2025 को श्री चिन्ना जियर स्वामी आश्रम (जीवा) पालमाकुलम, शमशाबाद, भाग्यनगर– 509325 में सम्पन्न हुई। उद्घाटन सत्र में मंचस्थ थे– पूज्य चिन्ना जियर स्वामी जी महाराज, डॉ सुरेन्द्र जैन– संयुक्त महामंत्री विहिप, प्रो लक्ष्मी नारायण जी, प्रांत मंत्री विहिप, नेविगेशन विभाग के विभागाध्यक्ष, उस्मानिया विश्वविद्यालय।

उद्घाटन सत्र में बोलते हुए मा. डॉ. सुरेन्द्र जैन ने कहा कि इस तपस्थली में आयोजित बैठक एक साधना बन गई है, यहाँ लिया हुआ संकल्प अवश्य पुरा होता है। गौरव का पल इस समय दिखाई दे रहा है– ऑपरेशन सिन्दूर। धर्म की पहचान करके निर्मम हत्या की गई। आज के समय में भी यह हो रहा है। क्या इलाज है इसका? इलाज दिखाया भारत ने, सम्पूर्ण इलाज दिखाया भारत की सेना ने, यह सेना विश्व की स्रवश्रेष्ठ सेना है। नेतृत्व ने दिखा दिया कि कुछ भी असम्भव नहीं है। अगला कदम गुलाम कश्मीर को वापस लेना है। सरकार और सेना को यह सामर्थ्य जनता के द्वारा मिलता है। ईवीएम से यह क्रान्ति आई। सामाजिक क्रांति से राजनीतिक बदलाव होता है। यहाँ अपना संगठन जबाब देने की स्थिति में है। हनुमान जयंति, श्रीरामनवमी, गणेश चतुर्थी इत्यादि देश की आवाज बनते हैं। मीनि पाकिस्तान के दिन अब लद गए। सम्पूर्ण देश में हमारा समाज मजबूति से खड़ा है।

श्री जैन ने कहा कि कुंभ में 66 करोड़ से अधिक ने स्नान किया था। जाति नहीं पूछी गई। पैदल चलकर लोग आए। शिकायत नहीं की। 60 करोड़ लोगों ने श्रीराम मंदिर के लिए योगदान दिया। उन्होंने बात आगे बढ़ाते हुए कहा कि तीन दिनों में नीचे तक की टीम बनाना है। आने वाला समय हमारा, हिन्दूत्व का समय। सम्पूर्ण विश्व में दुनिया के सभी समस्याओं का हल भारत में है, हिन्दूत्व में है। अपने सामने उस परिवर्तन को लेकर आयेंगे।

पूज्य स्वामी चिन्ना जियर जी महाराज ने कहा कि यहाँ से प्रेरणा लेकर, रणनीति बनाकर भारत के समग्र स्वरूप के निर्माण के लिए भूमिका निभाने के लिए आप तैयार हो रहे हैं। आपको भगवान शक्ति दे, सामर्थ्य दे।

मिडिया को प्रभावित करने के लिए मिडिया द्वारा सही रास्ता दिखाने के लिए आप संसिद्ध हैं। आज मिडिया का काल है। लोग प्रभावित होते हैं। मिडिया के लोग विषय जानकर जनता तक ठीक से पहुंचा सकें, तो बहुत लाभ होता है। ऑपरेशन सिन्दूर हो गया। दुनियाँ भारत की प्रशंसा कर रही है। सारे पक्ष सरकार की नीति को सराहते हैं।

महाराज जी ने कहा कि धर्मांतरण करने वाले लोग शास्त्रों के बारे में झूठ बोलकर सवाल उठाते हैं, शास्त्रों का अध्ययन न करने से इनका उत्तर नहीं पता होता है, तो उनका षड्यंत्र सफल हो जाता है, धर्मांतरण हो जाता है। यदि शास्त्र अध्ययन करेंगे, उठाये जा रहे प्रश्नों के सटीक उत्तर दे पाओगे, तो धर्मांतरण रुक जाएगा।

स्वामी जी ने आगे कहा कि कास्ट का रोल समाज में कम था। रामानुजाचार्य जी के समय में भी अस्पृश्यता थी, उनको मंत्र देकर भक्त बनाना, मंदिर का द्वार खोलना, महिलाओं पर अत्याचार होता था। स्वामी जी ने सबको समानता दिया था। अँग्रेजों से पहले स्वामी जी ने यह काम किया। कुम्भ में, यहाँ मंदिर में, तिरूपति में कोई भी जात पुछता नहीं। कास्ट का रोल नहीं है भारत में। बाहर के देशों के लोग इसको बढ़ाते हैं। जात को सामने रखकर समाज तोड़ने वालों की वास्तविक जानकारी बाहर लाने का प्रयास करना है।

स्वामी जी ने आशिर्वचन में कहा कि एक्साईटमेंट से अपने उपर संकट खड़ा नहीं करना है, धार्मिक विषयों की जानकारी प्राप्त करना है। यह ध्यान रखकर काम करने की ताकत भगवान आपको दें। आने वाला समय भारत का है, हिन्दूत्व का ही है। हम सबको चेतन–अचेतन को भगवत स्वरूप ही मानते हैं। स्वामी जी ने कहा कि पीएम ने कहा है कि– गड़बड़ करने वाले को सहन नहीं करना है, यह ऑपरेशन सिन्दूर से सिद्ध हुआ। हम अपने रास्ते पर सही से चलें, युक्ति और शक्ति भगवान हमें दे।

तीन दिन चले बैठक में 34 प्रान्तों के 87 कार्यकर्ता सहभागी हुए। विहिप के प्रचार विभाग की अखिल भारतीय टोली के साथ ही केन्द्रीय मंत्री श्री अम्बरीश जी, केन्द्रीय सह मंत्री श्री विजय शंकर तिवारी जी तथा केन्द्रीय महामंत्री मा. बजरंग लाल बागड़ा जी कार्यक्रम में विद्यमान रहे। मा. बागड़ा जी ने समापन सत्र में पाथेय देते हुए प्रान्तों की प्रचार–प्रसार टोली शीघ्र पूर्ण करने की अपेक्षा की। बैठक में कहे गए सभी बिन्दुओं को आपने नोट किया है, वह घर जाते समय मार्ग में ही दो–तीन बार अवश्य पढ़ें। कार्य की बारिकियों की विस्तार से चर्चा किया और कहा कि व्यवस्था बनाने से ही हम प्रभावी हो पायेंगे। टोली में हर बात चर्चा करने की आदत पर जोर देते हुए कहा कि चर्चा करने से गलतियाँ नहीं होती हैं। समाज के सामने सत्य लाना हमारा काम है। उन्होंने कहा कि आत्मावलोकन करने से ही संगठन आगे बढ़ता है। काम तेज गति से करने की आवश्यकता है।

रिपोर्ट– मुरारी शरण शुक्ल

विहिप के गोरक्षा विभाग के तत्वावधान में 'गौभक्त नागरिक संगोष्ठी का आयोजन'

पटना स्थित इस्कॉन मंदिर के समीप व्हाइट हाउस नक्षत्र गेस्ट हाउस में विश्व हिंदू परिषद के गोरक्षा विभाग द्वारा गौभक्त नागरिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में गोरक्षा से जुड़े कार्यकर्ता, कृषक एवं अन्य गौ–उपासक बड़ी सँख्या में उपस्थित हुए। संगोष्ठी में विश्व हिंदू परिषद गोरक्षा विभाग के केंद्रीय संरक्षक हुकुमचंद सांवला जी, विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री श्री स्थाणु मालयन जी, गौरक्षा के केंद्रीय प्रमुख श्री दिनेश उपाध्यक्ष जी, विहिप के केंद्रीय प्रन्यासी डॉ आर.एन. सिंह जी व गौरक्षा अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. गुरु प्रसाद जी ने अपने विचारों से संगोष्ठी में उपस्थित लोगों में नयी ऊर्जा का संचार किया और गौ रक्षा के प्रति समर्पण को बढ़ावा दिया।

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य वक्ता हुकुम चंद सांवला ने कहा कि आधुनिक कृषि पद्धतियों और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से होने वाले पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए जैविक कृषि एवं पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान को पुनर्जीवित करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने देशी गाय के दूध से होने वाले फायदे के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि गाय के दूध में स्वर्णभस्म होने के कारण गाय का दूध पीला होता है, इस कारण से गाय का दूध अमृत समान होता है। ग्रन्थों के अनुसार गाय के 4 थन चारों वेदों का प्रतिनिधित्व करते हैं, 4 पैर 4 पुरुषार्थ का और गाय में सुशोभित 12 भैवे 12 ज्योतिर्लिंग का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए गाय को विश्व की माता भी कहा गया है। गाय हिन्दू धर्म व संस्कृति का प्रतीक है और समाज का रक्षक है। जन्मजात बच्चे जब माँ की ममता से विहीन हो जाते हैं, तब गाय ही अपने दूध से माँ का ममत्व प्रदान करती है। उन्होंने गौसेवा के लिए सभी को सुझाव दिया कि अपनी परम्परा में गौग्रास निकालना पुण्य माना जाता है, इसके लिए प्रत्येक परिवार को निवेदन करना, हम सब का कर्तव्य है। केंद्रीय संयुक्त महामंत्री श्री स्थाणु मालयन ने बताया कि जैविक कृषि न केवल पर्यावरण संरक्षण में सहायक है, बल्कि यह किसानों के आर्थिक हितों एवं समाज के समग्र उत्थान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

कार्यक्रम का संचालन रविन्द्र राणा जी ने किया। संगोष्ठी में त्रिलोकी नाथ बागी जी, सन्तोष सिसौदिया जी, विमल जैन, अर्जुन प्रसाद जी, रविन्द्र राय जी, केशव राजू, शशांक शेखर जी, सरदार अनिल जी, रजनीश जी, पंचम जायसवाल, श्रीराम बाबा, नागेन्द्र जी, मुनि देवी, श्वेता देवी सहित सैकड़ों गौभक्त उपस्थित थे।

विहिप-संस्कार विकास न्यास द्वारा रामायण ज्ञान परीक्षा आयोजित

बाँका। विश्व हिंदू परिषद, संस्कार विकास न्यास द्वारा जिले में रामायण ज्ञान परीक्षा संपन्न हुई तथा रामायण ज्ञान परीक्षा में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र भी दिया गया। यह कार्यक्रम संस्कार संस्थान के निर्देशक श्री प्रदीप कुमार जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। कार्यक्रम में उपस्थित विश्व हिंदू परिषद के प्रांत संगठन मंत्री श्री चितरंजन कुमार ने बताया कि यह परीक्षा प्रत्येक वर्ष होती है, जिसमें अनेक विद्यालय के विद्यार्थी भाग लेते हैं, देश भर में लगभग 8 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने इस रामायण ज्ञान परीक्षा में भाग लिया है। इस परीक्षा के माध्यम से विद्यार्थी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के आदर्शों को आत्मसात करें, ऐसी प्रेरणा दी जाती है। परीक्षा को सफल बनाने में वी. एस.चौधरी, बम बम जी सहित अनेक शिक्षकों का भी बड़ा योगदान रहा।

chitranjan1964@gmail.com

अंडमान निकोबार द्वीप समूह में बजरंग दल - शौर्य प्रशिक्षण वर्ग

विश्व हिन्दू परिषद् अंडमान निकोबार द्वीप समूह के बजरंग दल–शौर्य प्रशिक्षण वर्ग का समापन समारोह 10 मई, 2025 को सायंकाल 04.00 बजे हुआ। हिंदू समाज की एकता एवं अखंडता के लिए बजरंग दल युवाओं को अधिक से अधिक जोड़ने का कार्य कर रहा है।

विहिप–केंद्रीय सहमंत्री एवं अखिल भारतीय सह सेवा प्रमुख श्री सपन कुमार मुखर्जी ने विवेकानंद जिला परिषद विद्यालय में बजरंग दल के प्रशिक्षण वर्ग के समापन समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए देश के युवाओं का आह्वान किया कि अधिक से अधिक सँख्या में बजरंग दल से जुड़कर राष्ट्र कार्य में सहभागिता निभाएँ। अंडमान की जनता के सामने श्री मुखर्जी ने प्रेरणादाई प्रसंग के साथ में युवाओं का जोश बढाया, जिसमें बजरंग दल के युवाओं का जोश देखने को मिला।

वर्ग के समापन सत्र में प्रकट कार्यक्रम को देखकर लोगों में उत्साह जगा। प्रशिक्षण प्राप्त किए कार्यकर्ताओं ने अपनी कला एवं कौशल के अभ्यास का प्रदर्शन किया। चिन्मय मिशन के पूज्य संत श्री शुदानंद सरस्वती जी के मुख्य सान्निध्य एवं आशीर्वचन ने युवाओं को प्रेरणादाई आशीर्वाद दिया। उन्होंने युवा शक्ति राष्ट्र शक्ति के साथ में राष्ट्र भक्ति का भी संदेश दिया। मंच में विशिष्ट अतिथि के रूप में मुंबई महाराष्ट्र विश्व हिंदू परिषद कोंकण प्रान्त के उपाध्यक्ष श्री सुरेश भारवानी जी ने बजरंग दल किस प्रकार से देश तथा विश्व भर में हिंदू संस्कृति के लिए अखंड भारत के लिए काम करता है, इस पर अपनी बात रखी। मुख्य अतिथि श्री सोम नायडू जी सहायक आयुक्त अंडमान प्रशासन (सेवानिवृत्त) ने शिक्षार्थिओं को सेवा, सुरक्षा, संस्कार पर ध्यान केन्द्रीत करने को कहा।

वर्ग में अंडमान निकोबार के लोकप्रिय सांसद श्री विष्णुपद राय जी, जिला परिषद प्रमिला दीदी समाजसेवी, विश्व हिंदू परिषद, संघ परिवार को पदाधिकारियों का बौद्धिक सान्निध्य मिला, जिनमें सर्वश्री विनायकराव देशपांडे जी अखिल भारतीय सह संगठन महामंत्री दिल्ली, संघ के विभाग प्रचारक श्री सुदीप राय तिवारी जी, संघ के विभाग कार्यवाह डॉ. अमिताभ डे, प्रांत सेवा भारती के अध्यक्ष उत्पल शर्मा जी निर्देशक डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, संघ के बौद्धिक प्रमुख श्री संदीप जी, संगठन मंत्री अविनाश जी गौड़, एडवोकेट शिव बालाजी, मुख्य शिक्षक चंदेश्वर प्रजापति श्री विजयपुरम बजरंग दल जिला संयोजक, शारीरिक प्रमुख नरेश पाटिल जी, मुम्बई क्षेत्र के क्षेत्रीय सामाजिक समरसता प्रमुख, वर्ग प्रमुख श्री एम एस हेवन जी मुख्य थे। बजरंग दल का वर्ग दिनांक 4 मई से प्रारंभ होकर 10 मई तक चला, समस्त व्यवस्था प्रमुख संचालन श्री राम बहादुर जी, श्री राम मिस्त्री जी भंडार एवं सहयोगी श्री योगेश राम जी रहे। यातायात व्यवस्था के प्रमुख श्री आदित्य नारायण, बंगाल के दो शिक्षक श्री सौरभ बिस्वास एवं कोलोल मंडल, बजरंग दल के स्थानीय शिक्षक, दिप विश्वास, बौद्धिक विभाग श्री नागराज जी ने संभाला, स्वच्छता विभाग के प्रमुख श्री संजय दास जी रहे, पंजीयन विभाग श्री अजय दास जी एवं सुरक्षा व्यवस्था प्रमुख श्री आशीष मांझी रहे। सिद्धार्थ नायडू, प्रांत मंत्री श्री राजेश राम ने अतिथियों का परिचय एवं स्वागत करवाया। संचालन विश्व हिंदू परिषद प्रांत सहमंत्री जवाहर लाल ने किया। प्रांत वर्ग में शिक्षक, प्रबंधन अधिकारी सहित कुल मिलाकर 136 सँख्या रही।

वर्ग को सफल बनाने में विश्व हिन्दू परिषद् के सभी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया एवं समाज के गणमान्य लोगों का तन–मन–धन से सहयोग रहा, सभी के प्रयास से वर्ग सफल रहा।

प्रस्तुति : राजेश राम
उप प्रान्त मंत्री–विहिप–अंडमान

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में बजरंग दल के शौर्य प्रशिक्षण वर्ग को
संबोधित करते विहिप केन्द्रीय सहमंत्री श्री सपन मुखर्जी जी तथा वर्ग में उपस्थित बजरंग दल के शिक्षार्थी

बांका (बिहार) में विश्व हिंदू परिषद, संस्कार विकास न्यास
द्वारा रामायण ज्ञान परीक्षा का आयोजन

पटना (बिहार) में विश्व हिंदू परिषद के गोरक्षा विभाग के
तत्वावधान में 'गौभक्त नागरिक संगोष्ठी का आयोजन'

मुंगेर विभाग व भागलपुर विभाग का
दुर्गावाहिनी का तीन दिवसीय अभ्यास वर्ग आयोजित

सूरत में कर्णावती क्षेत्र के धर्मरक्षकों के दक्षता वर्ग में उपस्थित विहिप केन्द्रीय, क्षेत्रीय व प्रांतीय पदाधिकारी

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.05.2025
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

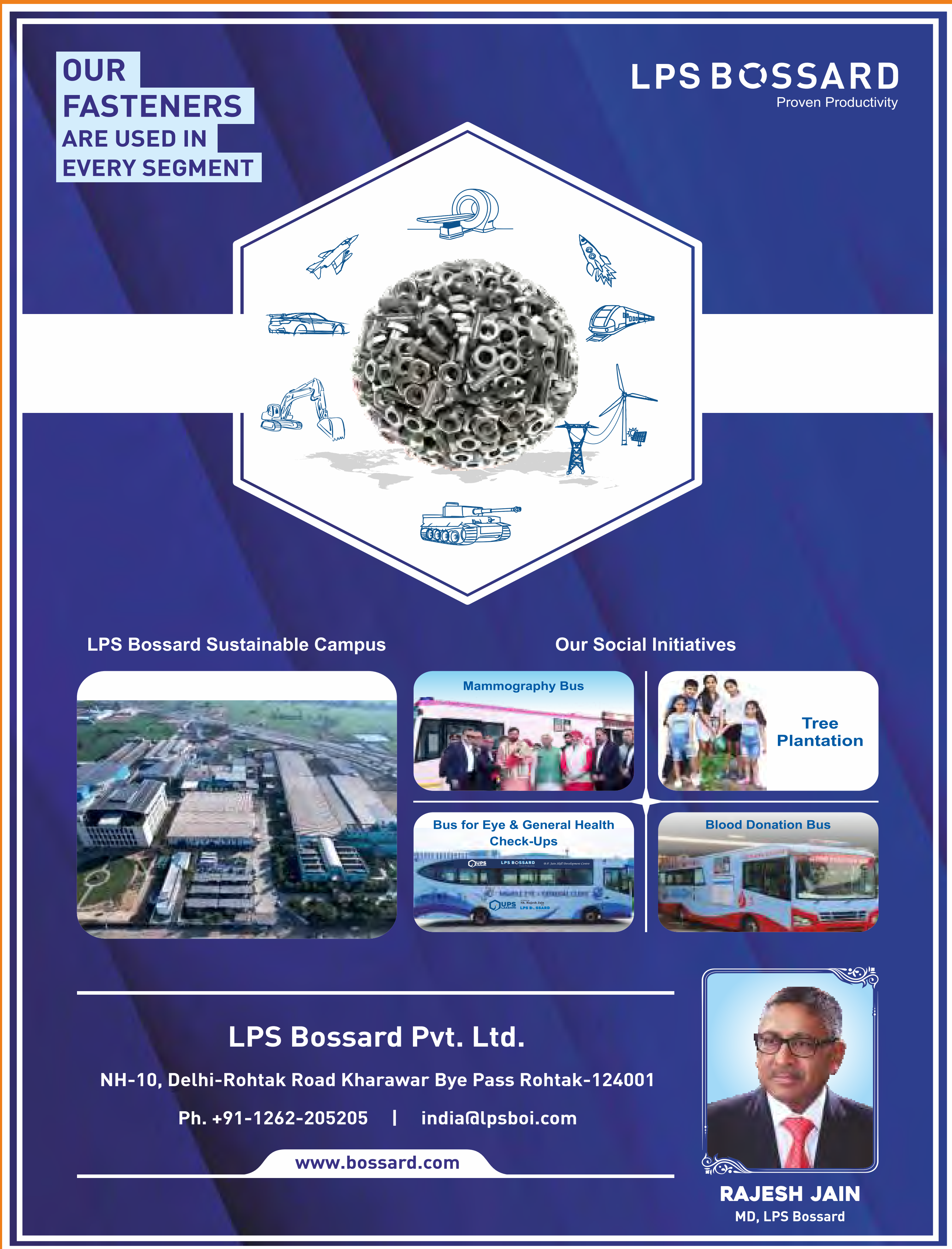

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी